HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

आश्विन-कार्तिक, युगाब्द 5122, सितंबर 2020

नई शिक्षा नीति 2020

बदलेगी तस्वीर

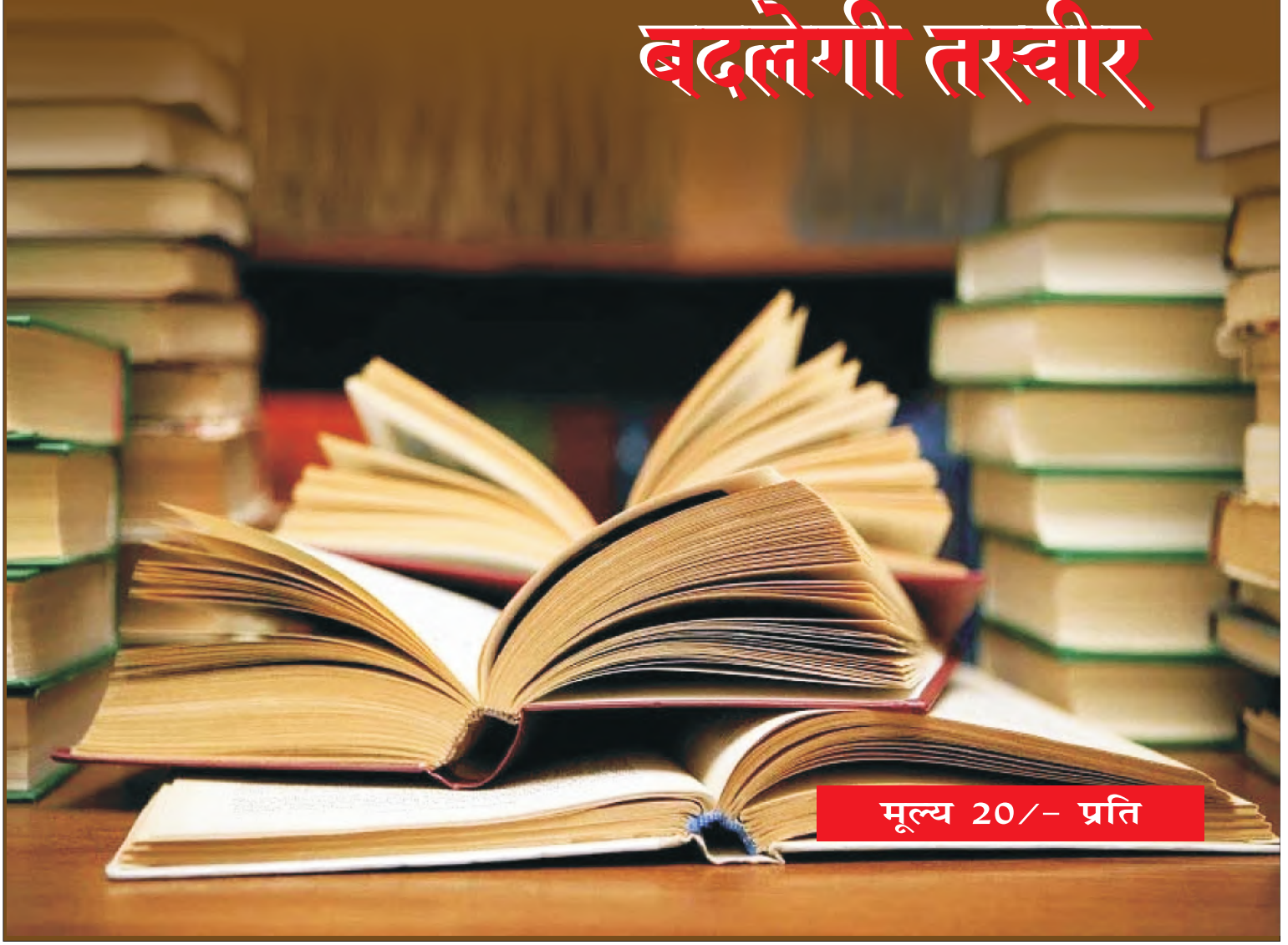

मूल्य 20/- प्रति

हिमाचल प्रदेश में हुए प्रकृति वंदन कार्यक्रमों की झलक

वता मढ़ेलू युवा मंडल ने रोपे देवदार के 400 पौधे

कृति वंदन कार्यक्रम में युवाओं ने बढ़चढ़ कर लिया भाग, पौधे रोपकर दिया प्रकृति संरक्षण का संदेश

रामपुर में स्वयंसेवक संघ प्रकृति वंदन करते हुए।

रामपुर में प्रकृति का वंदन करते स्वयंसेवक।

रामपुर में मनाया प्रकृति वंदन दिवस

कीटनाशक दवाइयों पर लगेगा प्रतिबं

प्राकृतिक खेती से जोड़ने के लिए किसानों को दिया जाएगा प्रशिक्षण : वीरेंद्र कं

बंगाणा,(आपका फैसला)।

हर पंचायत , हर गांव में कृषि अधिकारी किसानों को करेंगे जागरुक

राज्य सरकार में ग्रामीण विकास पंचायती राज कृषि मत्स्य एवं पशुपालन मंत्री वीरेंद्र कंवर ने बंगाणा में कहा कि प्राकृतिक खेती के लिए हिमाचल के किसानों को प्रशिक्षण देकर कीटनाशक दवाईयों से हो रहे नुक्सान के बारे में पूरी तरह से अवगत करवाया जाएगा। अब बीज वाली दुकानों के बाहर साइन बोर्ड भी लगाए जाएंगे और कीटनाशक दवाइयों पर पूरा प्रतिबंध लगेगा। ताकि किसान पूरी तरह से जागरूक होकर कीटनाशक दवाइयों से बिल्कुल परहेज करें। कंवर ने कहा कि राज्य के हर किसान को कृषि मंत्रालय से जोड़कर उन्हें प्राकृतिक खेती के लिए पूरी तरह से जागरूक किया जाएगा। कंवर ने कहा कि हिमाचल में अधिकतर किसान जहरीली कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग करके खुद और समाज को नुक्सान पहुंचा रहे हैं और दवाइयों से उगाई गई फसल का जहर परिवार को खिला रहे हैं। यही कारण है कि

आज हमारे अंदर सैंकड़ों बीमारियां जन्म ले रही हैं। उन्होंने कहा कि अगर हम प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दें और प्राकृतिक खेती करें, तो हमारा शरीर भी हृष्ट पुष्ट रहेगा। कंवर ने कहा कि प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए हर पंचायत , हर गांव में कृषि अधिकारी किसानों को जागरूक करने के लिए प्रशिक्षण शिविर भी लगाएंगे और अच्छी नस्ल के बीज और किस प्रकार किसान फसल की बिजाई करें। उसी मूलमंत्र से किसानों जागरूक किया जाएगा। कृषि मंत्री वीरेंद्र कंवर ने कहा कि राज्य में अब हर जहरीली स्प्रे जो किसान फसलों पर करते हैं। उन्हें बेचने की परमिशन अब राज्य में नहीं दी जाएगी और न ही को[...] बेचने वाला दुकानदार रखेग[...] ने कहा कि उसका कारण [...] कि किसान चोरी छिपे ऐसी [...] दवाइयों का फसलों पर प्रयो[...] अनाज को जहर बनाते हैं।

एक लाख परिवारों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का ल[...]

कंवर ने कहा कि केंद्र सरकार के 20 लाख करोड़ के पैकेज [...] हिमाचल प्रदेश को भी मिलने जा रहा है । क्योंकि 1200 करो[...] राज्य के हिस्से आएंगे। उन्होंने उदारता के साथ हिमाचल प्रदेश को [...] रही आर्थिक सहायता के लिए केंद्र सरकार का धन्यवाद किया त[...] कि हिमाचल प्रदेश में एफपीओ बनाने का कार्य शुरू कर दिया [...] तथा 99 एफपीओ बना लिए गए हैं। कृषि मंत्री ने कहा कि देश में [...] स्पीति का आलू व मटर प्रसिद्ध है तथा 7 जिलों में सेब का उत्पाद[...] है, लेकिन कृषि के लिए आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने की आव[...] है। एफपीओ के माध्यम से इस कार्य में आसानी होगी। कंवर ने [...] हिमाचल प्रदेश सरकार ने इस वर्ष 1 लाख किसान परिवारों को प्र[...] खेती के साथ जोड़ने का लक्ष्य रखा है तथा वर्ष 2022 तक पूरे [...] प्रदेश को प्राकृतिक खेती के तहत लाया जाएगा। उन्होंने कहा कि [...] 2021 तक एक जिला-एक उत्पाद का चयन कर केंद्र सरकार को [...] भेजी जाएगी और जो लक्ष्य तय किए गए हैं हिमाचल प्रदेश सरका[...] पूरा करेगी।

कृति वंदन पूजन के सफल आयोजन से प्रकृति संरक्षण की प्रतिज्ञा

[...]ा समाचार सेवा

[...]पुर 30 अगस्त। हिन्दु [...]त्मिक एव सेवा फाउंडेशन [...] एस एस एफ एवं पर्यावरण [...]ण गतिविधि के तहत पूरे देश [...]कृति वन्दन का कार्यक्रम 30 [...]स्त को सुबह 10 से 11 के [...] मनाया गया। इसी क्रम में [...]क्रम का आयोजन कानपुर प्रांत [...] 30 अगस्त को कानपुर प्रांत [...]ुख्य स्थल पंडित दिन दयाल [...]न मे तथा कानपुर महानगर [...]नेक परिवारों के अपने निवास [...]ों पर तथा कानपुर प्रांत के [...] जिलों में हुआ। कार्यक्रम मे [...]लित परिवारो ने प्रकृति वन्दन पूजन अपने अपने घरो, बगीचों मे भाव पूर्वक किया कार्यक्रम में सर संघचालक डॉ मोहन भागवत का उद्बोधन प्राप्त हुआ कार्यक्रम के मुख्य स्थल पर महापौर, मुख्य चिकित्सा अधिकारी कानपुर, प्रांत प्रचारक जी एव शहर के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम की सूचना यच एस एस एफ के प्रांत संयोजक डॉ अमित प्रकाश रघुवंशी ने दी। पूरा कार्यक्रम ऑन लाइन माध्यम से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संयोजन अर्पित सिंह राठौर, ओमेन्द्र भारत, राजेश तिवारी, रोहित अवस्थी, डी विवेक सचान और अविनाश चतुर्वेदी ने की।

हिंदू आध्यात्मिक और सेवा संस्थान ने मनाया प्रकृति वंदन कार्यक्रम

✔ शिमला रानी झांसी पार्क में हुआ आयोजन

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

प्रदेश भर में रविवार को प्रकृति वंदन के कई कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रकृति मनुष्य को सब कुछ बिना किसी अपेक्षा के देती है। मनुष्य को मिली सभी अनमोल वस्तुओं के धन्यवाद स्वरूप यह कार्यक्रम प्रदेशभर में मनाया गया। इसी कड़ी में हिंदू आध्यात्मिक व सेवा संस्थान द्वारा भी आम लोगों के साथ मिल शिमला के रानी झांसी पार्क में प्रकृति वंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत हिंदू आध्यात्मिक व सेवा संस्थान के प्रांत संयोजक रजत अवस्थी ने की। वहीं मुख्यतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत संघ चालक प्रोफेसर वीरसिंह रांगड़ा उपस्थित रहे। वहीं इस दौरान प्रकृति का जीवंत रूप पौधों का पूजन किया गया। पौधों की परिक्रमा की गई व इसके संरक्षण के दायित्व की जिम्मेवारी स्वीकार करने की शपथ भी ली गई। कार्यक्रम के मुख्यतिथि ने प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि प्रकृति हमारा हर प्रकार से रक्षण व पोषण करती है, हमें हर वस्तु प्रकृति से ही मिलती है। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है लेकिन फि र भी प्रकृति के अत्यधिक छेड़छाड़ करने पर हमें प्रकृति के उग्र रूप को झेलना पड़ता है। उन्होंने कहा प्रकृति को नाराज करने पर मनुष्य को जलप्रलय, भू-स्खलन और प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। सेवा संस्थान के प्रांत संयोजक रजत अवस्थी ने युवाओं को प्रकृति वंदन जैसे कार्यक्रमों से जुड़ने का आह्वान किया, जो मनुष्य और प्रकृति में समन्वय बनाते हैं।

मेधावी छात्राओं को प्रधानाचार्य ने दिया दो लाख का इनाम

जागरण संवाददाता, शिमला : जिला शिमला की वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला चियोग के प्रधानाचार्य संदीप कुमार शर्मा ने मिसाल पेश की है। उन्होंने स्कूल शिक्षा बोर्ड की मेरिट में आने वाली दो छात्राओं को एक-एक लाख रुपये का इनाम दिया है। यह राशि उन्होंने अपनी जेब से दी है। चियोग स्कूल की जमा दो की छात्रा रही सिमरन ने वाणिज्य संकाय में राज्य में तीसरा स्थान हासिल किया है। वहीं, वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला जुग्गर की छात्रा साक्षी शर्मा ने कला संकाय में राज्य में चौथा स्थान हासिल किया है।

जुग्गर स्कूल कलस्टर के तहत चियोग स्कूल के अधीन ही आता है। हालांकि साक्षी शर्मा परीक्षा परिणाम घोषित होने के दौरान आठवें स्थान पर रही थी। बाद में उन्होंने पुनर्मूल्यांकन करवाया तो अंकों में सुधार हुआ। चियोग स्कूल ठियोग तहसील के तहत आता है। प्रधानाचार्य संदीप कुमार शर्मा ने दोनों छात्राओं का आगे की पढ़ाई के लिए भी मार्गदर्शन किया है। दोनों छात्राओं ने सेंटर ऑफ एक्सीलेंस कॉलेज संजौली में प्रवेश लिया है।

शिमला की वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला चियोग की छात्रा सिमरन एक लाख रुपये के चेक साथ (बाएं)। प्रधानाचार्य संदीप कुमार शर्मा जुग्गर स्कूल की छात्रा साक्षी शर्मा को चेक [...] करते हुए। साथ हैं छात्रा के पिता दयानंद शर्मा • जागरण

सराहनीय

- चियोग स्कूल के प्रधानाचार्य संदीप शर्मा ने पेश की मिसाल, निजी राशि से किया सम्मानित
- एक छात्रा ने चियोग और दूसरी ने जुग्गर स्कूल से दी थी जमा दो की परीक्षा

बच्चों से किया था वादा

संदीप कुमार शर्मा दो साल पहले बतौर प्रधानाचार्य इस स्कूल में तैनात हुए थे। उन्होंने परीक्षा से पहले विद्यार्थियों से वादा किया था कि यदि कोई बोर्ड की मेरिट सूची में आता है तो वह उसे सम्मानित करेंगे।

सिमरन के पिता चाल[...] साक्षी किसान परिवा[...]

सिमरन के पिता पेशे से चालक हैं, जबकि माता गृ[...] है। साक्षी किसान परिवार से संबंध रखती है। चियोग ग्रामीण क्षेत्र में यह स्कूल [...] स्कूल की एक छात्रा कुश[...] राष्ट्रस्तर पर प्रतिनिधित्व [...] चुकी है।

मातृवन्दना संस्थान का प्रकाशन

मातृवन्दना

वर्ष: 20 अंक : 09 | आश्विन-कार्तिक कलियुगाब्द 5122, सितम्बर 2020

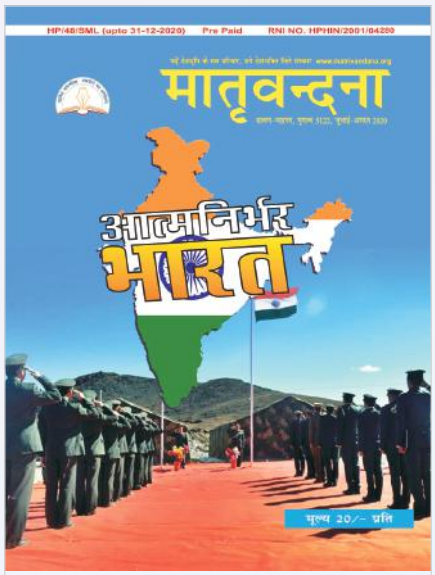

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

मीनाक्षी सूद
डॉ. अर्चना गुलेरिया
डॉ. उमेश मौदगिल
डॉ. जय कर्ण

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र., दूरभाष : 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक : कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेज-9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित। **संपादक : डॉ. दयानंद शर्मा**

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय	नई शिक्षा नीति का अभिनंदन	5
चिन्तन	अतिवादी से मानवतावादी	6
प्रेरक प्रसंग	परमात्मा की लाठी	7
आवरण	नई शिक्षा नीति से प्रशस्त होगा	8
देश प्रदेश	कोरोना के बाद सिनेमा	11
देवभूमि	हिमाचल का पारंपरिक डगैली	14
पुण्य जयंती	वर्ग और जातिहीन संघर्ष मुक्त	16
घूमती कलम	भारत सरकार देगी 50 लाख	17
कृषि जगत	स्वस्थ प्राकृतिक खाद्य पदार्थों	19
युवा पथ	संभावनाएं और रोजगार के	21
स्वास्थ्य जगत	कोरोना काल में भारतीय मसालों	22
विश्व दर्शन	चीन की विस्तारवादी सोच	23
समसामयिकी	राम मंदिर निर्माण की आधार	24
महिला जगत	सेवा में तत्पर भारतीय नारी	26
काव्य जगत	भारत की गाथा गाता हूं	27
प्रतिक्रिया	नस्लभेदी चर्च और दलित	28
पर्यावरण	प्रकृति वंदन और संरक्षण	29
दृष्टि	कैंसे न्यूयॉर्क शहर सबसे	30
विविध	स्कूली शिक्षा में हिंदी	31
साईबर गड़गप		33
बाल जगत	बच्चों द्वारा प्रकृति वंदन	34

पाठकीय...

सम्पादक महोदय,

प्रदेश में अब कोई भी गोवंश सडकों पर बेसहारा नहीं घूमेगा ऐसा प्रदेश सरकार का कहना है। प्रदेश सरकार ने सड़कों पर घूमने वाले इन सभी बेसहारा पशुओं को प्रदेश भर में गौशाला के अलावा सरकार की ओर से हर जिले में संचालित अभ्यारण्य क्षेत्र में रखा जाएगा। यहां पर सरकार की ओर से 500 रुपए प्रति गाय के हिसाब से खर्चा दिया जाएगा। जिससे इन पशुओं के पालन-पोषण की चिंता अब नहीं रहेगी।

_____प्रदेश भर में तीस हजार गौवंश है। जिसमें 14 हजार गौवंश गौशाला व अभ्यारण्य क्षेत्र में पल रहे हैं। जबकि 16 हजार गौ वंश सड़कों पर बेसहारा घूम रहा है। _इन पशुओं को अब विभाग गौशाला व अभ्यारण्य क्षेत्र में रखेगा। हिमाचल में 192 गौशालाएं हैं। प्रदेश में सिरमौर के कोटला बड़ोग के वन्य अभ्यारण क्षेत्र को चालू कर दिया है। सोलन के हांडा कुंडी, ऊना के थानाकलां व हमीरपुर की खैरी वन्य अभ्यारण्य क्षेत्र को तीन माह के भीतर चालू कर दिया जाएगा। कांगड़ा के लोथान, खबल, कगेण तथा कुठन में वन्य क्षेत्र के लिए जमीन विभाग के नाम हो गई है जहां पर जल्द ही कार्य चालू कर दिया जाएगा। यदि यह योजना धरती पर कारगर सिद्ध होती है तो अपना राज्य देश में पहला होगा। ◆◆◆शांति गौतम, बद्दी, सोलन

हिंदू आध्यात्मिक और सेवा संस्थान ने मनाया प्रकृति वंदन कार्यक्रम

✓ शिमला रानी झांसी पार्क में हुआ आयोजन

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

प्रदेश भर में रविवार को प्रकृति वंदन के कई कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रकृति मनुष्य को सब कुछ बिना किसी अपेक्षा के देती है। मनुष्य को मिली सभी अनमोल वस्तुओं के धन्यवाद स्वरूप यह कार्यक्रम प्रदेशभर में मनाया गया। इसी कड़ी में हिंदू आध्यात्मिक व सेवा संस्थान द्वारा भी आम लोगों के साथ मिल शिमला के रानी झांसी पार्क में प्रकृति वंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत हिंदू आध्यात्मिक व सेवा संस्थान के प्रांत संयोजक रजत अवस्थी ने की। वहीं मुख्यतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत संघ चालक प्रोफेसर वीरसिंह रांगड़ा उपस्थित रहे। वहीं इस दौरान प्रकृति का जीवंत रूप पौधों का पूजन किया गया। पौधों की परिक्रमा की गई व इसके संरक्षण के दायित्व की जिम्मेवारी स्वीकार करने की शपथ भी ली गई। कार्यक्रम के मुख्यतिथि ने प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि प्रकृति हमारा हर प्रकार से रक्षण व पोषण करती है, हमें हर वस्तु प्रकृति से ही मिलती है। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है लेकिन फि र भी प्रकृति के अत्यधिक छेड़छाड़ करने पर हमें प्रकृति के उग्र रूप को झेलना पड़ता है। उन्होंने कहा प्रकृति को नाराज करने पर मनुष्य को जलप्रलय, भू-स्खलन और प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। सेवा संस्थान के प्रांत संयोजक रजत अवस्थी ने युवाओं से प्रकृति वंदन जैसे कार्यक्रमों से जुड़ने का आह्वान किया, जो मनुष्य और प्रकृति में समन्वय बनाते हैं।

सितंबर 2020 आश्विन माह के व्रत-त्यौहार

तिथि	दिन	व्रत/त्योहार
1 सितंबर	मंगलवार	अनंत चतुर्दशी, गणेश विसर्जन,
1 सितंबर	मंगलवार	श्राद्ध पक्ष प्रारंभ
4 सितंबर	शुक्रवार	दानाभाई नौरोजी जयंती
5 सितंबर	शनिवार	शिक्षक दिवस,
11 सितंबर	शुक्रवार	संत विनोबा भावे जयंती
13 सितंबर	रविवार	इन्दिरा एकादशी
14 सितंबर	सोमवार	हिन्दी दिवस
15 सितंबर	मंगलवार	मासिक शिवरात्रि, प्रदोष व्रत (कृष्ण)
16 सितंबर	बुधवार	कन्या संक्रांति, स्वामी प्राणनाथ प्रकटन महोत्सव
17 सितंबर	गुरुवार	आश्विन अमावस्या, श्राद्ध की पितृमोक्ष सर्वपितृ अमावस्या
18 सितंबर	शुक्रवार	पुरुषोत्तम अधिमास प्रारंभ
20 सितंबर	रविवार	विनायक चतुर्दशी व्रत
23 सितंबर	बुधवार	दिन रात बराबर
25 सितंबर	शुक्रवार	पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती
27 सितंबर	रविवार	पद्मिनी एकादशी
27 सितंबर	रविवार	कमला एकादशी, विश्व पर्यटन दिवस
28 सितंबर	सोमवार	पंचक प्रारंभ
29 सितंबर	मंगलवार	प्रदोष व्रत (शुक्ल)
29 सितंबर	मंगलवार	विश्व हृदय दिवस

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 7650000990

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस, विश्वेश्वरैया जयंती और पंडित दीन दयाल उपाध्याय जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (सितम्बर)

अनंत चतुर्दशी गणेश विसर्जन,	1 सितंबर
श्राद्ध पक्ष प्रारंभ	1 सितंबर
शिक्षक दिवस	5 सितंबर
इन्दिरा एकादशी	13 सितंबर
हिन्दी दिवस	14 सितंबर
विश्वेश्वरैया जयंती	15 सितंबर
सर्वपितृ अमावस्या	17 सितंबर
पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती	25 सितंबर
पुरुषोत्तमा एकादशी	27 सितंबर
पंचक प्रारंभ	28 सितंबर

नई शिक्षा नीति का अभिनन्दन

ज्ञान का मूल स्त्रोत है शिक्षा। जीवन मूल्यों के प्रति सजगता ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है। बुद्धि, विवेक, विज्ञान, व्यवहारिकता, व्यवसाय, विधि-विधान एवं विचारों में परिष्कृति केवल शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। आत्म और भौतिक विकास का लक्ष्य शिक्षा से ही हासिल किया जा सकता है। शिक्षा वास्तव में एक संस्कार है जो मनुष्य को सार्थक एवं सफल जीवन प्राप्ति के लिए सक्षम बनाती है। शिक्षा मनुष्य की आत्मा और उसके समूचे व्यक्तित्व में निखार लाती है। दार्शनिकों, शिक्षाविदों एवं महापुरूषों का मानना है कि शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति की बुद्धि, आत्मा और शरीर से जुड़ा हुआ है। अतएव प्रतिभा, चरित्र एवं सुखी जीवन निर्माण में शिक्षा का ही प्रमुख योगदान रहता है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' इस वैदिक मंत्र में अज्ञानरूपी अन्धकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है। वास्तव में शिक्षा ही ज्ञानरूपी प्रकाश को प्रदान करती है। आधुनिक शिक्षाविद एवं विचारक शिक्षा को स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता का सोपान भी मानते हैं। भारत प्राचीन काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। यहां तक्षशिला, नालन्दा, काशी तथा अन्य कई बड़े-बड़े शिक्षा केन्द्र थे जहां अपने देश से ही नहीं अपितु विश्व के कई देशों से हजारों विद्यार्थी आकर शिक्षा ग्रहण कर स्वयं को धन्य मानते थे। उस काल में शिक्षा अपने चरमोत्कर्ष पर थी। आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान से ओत-प्रोत विविध विषयों से जुड़ी व्यवहारिक शिक्षा प्रदान करने में इन विश्वविद्यालयों के आचार्यगण विश्व में प्रसिद्ध थे। अतएव भारत को विश्वगुरू माना जाता था। यहां का प्रत्येक स्नातक किसी विशिष्ट कला-कौशल से सम्पन्न होता था।

वर्तमान में हम जब लार्ड मैकाले द्वारा प्रदत्त अपने देश की शिक्षा पद्धति का आकलन करते हैं तो स्पष्टत: यह प्रतीत होता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली उस प्राचीन शिक्षा पद्धति के अनुरूप आगे नहीं बढ़ पाई। शिक्षा के सुपरिभाषित प्रयोजनों एवं उद्देश्यों की दृष्टि से हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था कितनी उपयुक्त एवं सार्थक रही है, इस पर विचार करना आवश्यक हो गया था। इसलिए वर्तमान सरकार ने देश के बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा अभिभावकों से गहन विचार विमर्श करके एक नई शिक्षा नीति का निर्माण किया है। इसमें अभी तक चली आ रही शिक्षा नीति के बुनियादी ढांचे में काफी हद तक बदलने की कवायद की गई है। इस शिक्षा नीति में जहां एक ओर विद्यार्थी के आत्मिक एवं नैतिक विकास की ओर ध्यान दिया गया, वहीं दूसरी ओर शिक्षा को रोजगार परक बनाने के लिए भी प्रयास किया गया है। नई शिक्षा नीति में प्राथमिक से उच्च शिक्षा पर्यन्त एक ऐसे पाठ्यक्रम और अध्यापन प्रणाली के विकास पर बल दिया गया है जिसके तहत पाठ्यक्रम के बोझ को हल्का करते हुए छात्रों में रूचि के अनुरूप आधुनिक कौशल-विकास, अनुभव आधारित शिक्षण और तार्किक चिंतन को प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसलिए शिक्षण-प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित एवं कुशल बनाने के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण एवं पुनश्चर्या कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाऐगी। प्रस्तावित सुधारों के अनुसार कला और विज्ञान, व्यावसायिक तथा शैक्षणिक विषयों में बहुत अधिक अन्तर नहीं होगा। विज्ञान विषयों के साथ विद्यार्थी अन्य भाषा-कला साहित्य सम्बन्धी विषय का भी अध्ययन कर सकते हैं। प्राथमिक स्तर की शिक्षा में मातृभाषा को अधिमान दिया गया है। छठी कक्षा से वोकेशनल विषय भी लागू कर दिये गये हैं। व्यवसायिक शिक्षा में किसी एक व्यवसाय अथवा कौशल को चुनकर उसमें स्नातक उपाधि प्राप्त कर निजी व्यवसाय भी प्रारम्भ कर सकते हैं अथवा उस क्षेत्र में नौकरी भी कर सकते हैं। इस प्रकार बेरोजगारी दूर करने में नई शिक्षा नीति काफी हद तक कारगर सिद्ध हो सकती है। उच्च शिक्षा में भी पर्याप्त परिवर्तन किए गये है जिन्हें मातृभाषा के आवरण स्तम्भ के लेखों में विस्तार से बताया गया है। भारत में हिमाचल पहला राज्य है जिसने इस नई शिक्षा नीति को लागू करने की घोषणा कर दी है। यहां तीसरी कक्षा से संस्कृत विषय पढ़ाने का भी प्रावधान किया गया है। नैतिक स्तर को बढ़ाने एवं उत्तम संस्कारों को प्रदान करने में संस्कृत सहायक सिद्ध हो सकती है। सम्पूर्ण भारत में नई शिक्षा नीति का दीपक प्रज्जवलित हो और देश शिक्षा के बल पर आगे बढ़े यही हमारी अभिलाषा है। ◆◆◆

आततायी नहीं मानवता वादी बनो

... चेतन कौशल नूरपुरी

मनु व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप लेख में डा0 बी.सी. चौहान ने लिखा है। मनुस्मृति के अध्याय 3 के श्लोक 167 और 168 के अनुसार – चारों वर्णों के वैदिक ऋषि थे। ब्राह्मण वर्ण के पितर भृगु ऋषि के पुत्र सोम थे। क्षत्रिय वर्ण के पितर अंगिरा ऋषि के पुत्र हविश्मंत थे। वैश्य वर्ण के पितर पुलत्स्य ऋषि के पुत्र आज्यप थे। शूद्र वर्ण के पितर वशिष्ठ ऋषि के पुत्र सुकालिन थे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि वेदों के रचनाकार जो ऋषि थे, उनके द्वारा वैदिक ग्रंथों की संरचना जाति, पंथ, भाषा व भूगोल को केंद्रित कर नहीं हुई थी बल्कि समस्त मानव जाति और विश्व के कल्याणार्थ ध्यान में रखकर उनकी रचना की गई थी। विश्व में अखण्ड भारत से कौन अपरिचित है? भारत के अनुसार – विश्व में मात्र एक जाति मानव है, नर-नारी उसके दो रूप हैं। धर्म मानवता है। सत्य की पताका भगवा है। भाषा संस्कृत या देवनागरी है। राज्य सत्य, धर्म, न्याय और सदाचार के प्रति समर्पित हैं। सत्ता का राज्य के प्रति समर्पण आवश्यक है। राष्ट्र अखण्ड भारत व विश्व एक परिवार है। जिस काल में भारत सोने की चिड़िया के नाम से विश्व विख्यात हुआ था और विश्वगुरु बना था, वह वैदिक काल ही था। लोग प्रकृति से प्रेम किया करते थे। उनके हर हाथ करने के लिए कोई न कोई कार्य अवश्य मिलता था। लोग मेहनती थे। वे कृषि-बागवानी किया करते थे। वे गोवंश को गौमाता कहना अधिक पसंद करते थे और उसकी सेवा किया करते थे। धरती पर कहीं वर्षा या पीने के लिए जल और खाने के लिए अन्न, कंदमूल और फलों की कोई कमीं नहीं रहती थी। चारों ओर सुख-समृद्धि दिखाई देती थी। इतिहास साक्षी है कि हम शौर्य-पराक्रम में किसी से कभी कम नहीं रहे। हमने किसी पर कभी आक्रमण नहीं किया बल्कि हर बार आक्रमणकारी को मुंहतोड़ उत्तर दिया है। हमसे जब-जब जिसने लड़ने का दुस्साहस किया है, उसने हमसे मुंह की खाई है।

प्रकृति परिवर्तनशील है। उसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। हम बहुत से लोगों का सोचने का ढंग बदल गया है। हमारी सेवा, त्याग की भावना स्वार्थ में

पूर्ण होती जा रही है। हमारे परमार्थ के कार्यों ने स्वार्थ का स्थान ले लिया है। पहले हमें परमार्थ कार्य करने में बहुत आनन्द आता था। हम उसे करने में सदा प्रसन्न रहते थे, पर हमें अब स्वार्थ पूर्ण कार्य करने में अधिक मजा आने लगा है। हम सत्य, न्याय, धर्म और परमार्थ को निरंतर भूलते जा रहे हैं। हम अन्याय, असत्य, अधर्म की राह पर चल पड़े हैं। हम महत्वाकांक्षी लोगों ने समाज को अपनी-अपनी इच्छाओं के अनुरूप साम, दाम, दंड और भेद के बल पर वेद विरुद्ध बलात् विभिन्न धर्म, जाति, पंथ, भाषा, खगोल व भूगोल के नाम पर बांट लिया है और हम उसे बांटने का यह क्रम परोक्ष या अपरोक्ष रूप में अविरल जारी रखे हुए हैं। गीता के पहले अध्याय में 36वें श्लोक की व्याख्या करते हुए स्वामी प्रभुपाद जी महाराज कहते हैं-वैदिक आदेशानुसार आततायी छः प्रकार के होते हैं – 1. विष देने वाला 2. घर में अग्नि लगाने वाला 3. घातक हथियार से आक्रमण करने वाला 4. धन लूटने वाला 5. दूसरे की भूमि हड़पने वाला तथा 6. पराई स्त्री का अपहरण करने वाला और इस क्रम में आधुनिक काल के तीन और आततायी जुड़ गए हैं 7. वाहन व सवारी को क्षति पहुंचाने वाला 8. भवन अथवा पुल को बम से उड़ाने वाला 9. तस्करी करने वाला।

आतंकवाद का कार्य आततायी ही करते हैं, सज्जन पुरूष नहीं। वे अनेकों रूप धारण कर चुके हैं। लगभग 1400 वर्षों से लेकर आज तक आततायियों ने सदैव अन्याय, असत्य, अधर्म का ही सहारा लिया है और उससे मात्र सज्जन पुरुषों को निशाना बनाया है, उन्हें हर प्रकार से हानि पंहुचाई है, जबकि आर्य पुरुष न्याय, सत्य और धर्म प्रेमी रहे हैं और उन्होंने आततायियों के द्वारा प्रायोजित अन्याय, अनाचार, असत्य, अधर्म के विरुद्ध किए जा रहे समस्त कार्यों का डट कर बड़ी वीरता से सामना किया है और अपनी विजय का परचम लहराया है। हमें अपने अतीत को कभी नही भूलना चाहिए। हम सब ऋषियों की संतानें हैं। हम आर्य पुरुष न्याय, सत्य, सदाचार और धर्म प्रेमी वीर पुरुष थे, हैं और रहेंगे। वेदों के रचनाकार ऋषि थे। वैदिक ग्रंथों की संरचना समस्त मानव जाति और विश्व के कल्याणार्थ ध्यान में रखकर की गई थी। यही हमारी विरासत है। उसकी रक्षा करने के लिए लाख बाधाएं होते हुए भी हमें सत्य, न्याय, सदाचार धर्म और परमार्थ की राह पर निरंतर चलना होगा ताकि विश्व स्तर पर आततायियों के द्वारा प्रायोजित अन्याय, असत्य, अनाचार एवं अधर्म के विरुद्ध कार्यों का हम अनुशासित एवं संगठित और वीरता के साथ डट कर उनका सामना कर सकेंगे। ◆◆◆

'परमात्मा की लाठी'

एक साधू वर्षा के जल में प्रेम और मस्ती से भरा चला जा रहा था, कि उसने एक मिठाई की दुकान को देखा, जहां एक कढ़ाई में गरम दूध उबाला जा रहा था तो मौसम के हिसाब से दूसरी कढ़ाई में गरमा गरम जलेबियां तैयार हो रही थीं।

साधू हलवाई की भठ्ठी को बड़े गौर से देखने लगा साधु कुछ खाना चाहता था, लेकिन साधू की जेब ही नहीं थी तो पैसे भला कहां से होते, साधु कुछ पल भठ्ठी से हाथ सेकने के बाद चला ही जाना चाहता था कि नेक दिल हलवाई से रहा न गया और एक प्याला गरम दूध और कुछ जलेबियां साधू को दे दीं। साधू बाबा का पेट भर चुका था दुनिया के दु:खों से बेपरवाह, वो फिर एक नए जोश से बारिश के गंदले पानी के छींटे उड़ाता चला जा रहा था। इस बार इस मस्त साधू ने बारिश के गंदले पानी में जोर से लात मारी। बारिश का पानी उड़ता हुआ सीधा पीछे आने वाली युवती के कपड़ों को भिगो गया उस औरत के कीमती कपड़े कीचड़ से लथ-पथ हो गए, उसके युवा पति से यह बात बर्दाश्त नहीं हुई। लेकिन युवा की आंखों से निकलती नफरत की चिंगारी देख वह भी फिर पीछे खिसकने पर मजबूर हो गई।

राह चलते राहगीर भी उदासीनता से यह सब दृश्य देख रहे थे लेकिन युवा के गुस्से को देखकर किसी में इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उसे रोक पाते और आखिर जवानी के नशे में चूर इस युवक ने, एक जोरदार थप्पड़ साधू के चेहरे पर जड़ दिया। बूढ़ा मलंग थप्पड़ की ताब न झेलता हुआ लड़खड़ाता हुआ कीचड़ में जा गिरा। युवक ने जब साधू को नीचे गिरता देखा तो मुस्कुराते हुए वहां से चल दिया।

बूढ़े साधू ने आकाश की ओर देखा और उसके होठों से निकला वाह मेरे भगवान कभी गरम दूध जलेबियां और कभी गरम थप्पड़!!!

लेकिन जो तू चाहे मुझे भी वही पसंद है।

यह कहता हुआ वह एक बार फिर अपने रास्ते पर चल दिया।

दूसरी ओर वह युवा जोड़ा अपनी मस्ती को समर्पित अपनी मंजिल की ओर अग्रसर हो गया। वो युवा अपनी जेब से चाबी निकाल कर अपनी पत्नी से हंसी मजाक करते हुए ऊपर घर की सीढ़ियों तय

कर रहा था। बारिश के कारण सीढ़ियों पर फिसलन हो गई थी। अचानक युवा का पैर फिसल गया और युवक का सिर फट गया था। कुछ ही देर में ज्यादा खून बह जाने के कारण इस युवक की मौत हो चुकी थी। कुछ लोगों ने दूर से आते साधू बाबा को देखा तो आपस में कानाफूसी होने लगी कि निश्चित रूप से इस साधू बाबा ने थप्पड़ खाकर युवा को श्राप दिया है अन्यथा ऐसे नौजवान युवक का केवल सीढ़ियों से गिर कर मर जाना बड़े अचम्भे की बात लगती है। एक युवा कहने लगा कि-'आप कैसे भगवान के भक्त हैं जो केवल एक थप्पड़ के कारण युवा को श्राप दे बैठे। भगवान के भक्त में रोष व गुस्सा हरगिज नहीं होता। आप तो जरा सी असुविधा पर भी धैर्य न कर सकें।' साधू बाबा कहने लगा-'भगवान की कसम! मैंने इस युवा को श्राप नहीं दिया।' 'अगर आप ने श्राप नहीं दिया तो ऐसा नौजवान युवा सीढ़ियों से गिरकर कैसे मर गया?' तब साधू बाबा ने दर्शकों से एक अनोखा सवाल किया कि-'आप में से कोई इस सब घटना का चश्मदीद गवाह मौजूद है?' एक युवक ने आगे बढ़कर कहा -'हाँ! मैं इस सब घटना का चश्मदीद गवाह हूँ।' साधु ने अगला सवाल किया-'मेरे क□दमों से जो कीचड़ उछला था क्या उसने युवा के कपड़ों को दागी किया था?'

युवा बोला- नहीं। लेकिन महिला के कपड़े जरूर खराब हुए थे।'

मलंग ने युवक की बाँहों को थामते हुए पूछा- 'फिर युवक ने मुझे क्यों मारा' युवा कहने लगा - 'क्योंकि वह युवा इस महिला का प्रेमी था और यह बर्दाश्त नहीं कर सका कि कोई उसके प्रेमी के कपड़ों को गंदा करे। इसलिए उस युवक ने आपको मारा।' युवा की बात सुनकर साधू बाबा ने एक जोरदार ठहाका बुलंद किया और यह कहता हुआ वहाँ से विदा हो गया..... 'तो! भगवान की कसम! मैंने श्राप कभी किसी को नहीं दिया लेकिन कोई है जो मुझसे प्रेम रखता है। अगर उसका यार सहन नहीं कर सका तो मेरे यार को कैसे बर्दाश्त होगा कि कोई मुझे मारे? और वो मेरा यार इतना शक्तिशाली है कि दुनिया का बड़े से बड़ा राजा भी उसकी लाठी से डरता है।' सच है। उस परमात्मा की लाठी दिखती नहीं और आवाज भी नहीं करती, लेकिन पड़ती है तो बहुत दर्द देती है। हमारे कर्म ही हमें उसकी लाठी से बचाते हैं, बस कर्म अच्छे होने चाहिए।◆◆◆

नई शिक्षा नीति से प्रशस्त होगा उच्च शिक्षा का मार्ग

... कर्म सिंह ठाकुर

प्राचीन समय में भारत उच्च शिक्षा के कारण विश्व गुरु कहलाता था। बड़े-बड़े दूरवर्ती देशों कोरिया,चीन, बर्मा (म्यांमार), सिलोन (श्रीलंका), तिब्बत और नेपाल से भी छात्रों की शैक्षणिक गतिविधियों का केंद्र तक्षशिला, नालंदा तथा विक्रमशिला जैसे संस्थान ही थे। लेकिन कालांतर में कुछ विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण तथा लंबी गुलामी की जंजीरों की जकड़न के कारण उच्च शिक्षा गर्त में चली गई। 29 जुलाई 2020 को केंद्रीय कैबिनेट द्वारा नई शिक्षा नीति को स्वीकृति प्रदान की गई। वर्ष 1986 में बनी शिक्षा नीति को 34 वर्षों बाद बदला जा रहा है। नई शिक्षा नीति का लक्ष्य भारत के स्कूलों और उच्च शिक्षा प्रणाली में इस तरह के सुधर करना है कि देश दुनिया में भारत के ज्ञान व विज्ञान का वर्चस्व सुपर पॉवर के रूप में बन सके। पिछले कुछ दशकों से चीन, जापान जैसे देशों ने अपनी मातृभाषा में शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित करने के कारण अद्भुत तरक्की की है। भारत की नई शिक्षा में भी पांचवीं कक्षा तक के बच्चों की पढ़ाई उनकी मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा में उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया है। ताकि डिग्री धारकों की अपेक्षा ज्ञानवर्धक प्रतिभा को बाहर निकाला जा सके। बोर्ड परीक्षाओं के महत्व को इसमें कुछ कम किया गया है, विधि और मेडिकल कॉलेजों के अलावा अन्य सभी विषयों की उच्च शिक्षा के एक एकल नियामक का प्रावधान है, साथ ही विश्वविद्यालयों में दाखिले के लिए समान प्रवेश परीक्षा की बात कही गई है।

आजादी के 7 दशकों बाद भी भारत वैश्विक स्तर पर उच्च शिक्षा के संस्थानों में पिछड़ा हुआ है। इसके प्रमुख कारणों में खराब शैक्षिक प्रदर्शन, इंफ्रास्ट्रक्चर का अभाव, रोजगार की दयनीय स्थिति, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त होने वाले शैक्षिक पुरस्कारों का अभाव, व्यावसायिक शैक्षिक कार्यक्रमों को मान्यता देने में खराब ट्रैक रिकॉर्ड और शोध एवं अनुसंधान के लिये धन का अभाव इत्यादि प्रमुख हैं। भारत शोध के ऊपर बहुत कम धनराशि खर्चा करता है जबकि विश्व के विकसित व विकासशील देश शोध इत्यादि पर ज्यादा ध्यान देते हैं। द टाइम्स विश्व यूनिवर्सिटीज रैंकिंग-2020 के अनुसार, यूनाइटेड किंगडम की यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड शीर्ष पर है जबकि दुनिया के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी विश्वविद्यालय नहीं है। यह भारत जैसे बड़े देश के लिए चिंतनीय विषय है। नई शिक्षा नीति में जीडीपी का 6 प्रतिशत तक शिक्षा पर खर्च करने की बात कही गई है जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है। भारत की शिक्षा प्रणाली दो धड़ों में बंटी हुई प्रतीत होती है जिसमें एक धड़ा धन के बल पर अपनी आने वाली पीढ़ी को अच्छी शिक्षा मुहैया करवा देता है वहीं दूसरी तरफ धनहीन, गरीब, असहाय को उच्च शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। भारत जैसे विकासशील देश में उच्च शिक्षा की धीमी गति चिंतनीय विषय है। नई शिक्षा नीति की धरातलीय पहुंच इस तरह से सुनिश्चित हो कि गरीब से गरीब व असहाय अभ्यार्थी भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित न रहे। नई शिक्षा नीति समाज में समरूपता के भाव को उजागर करती हुई आधुनिक भारत को बुलंदियों पर पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त करे।

हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा 24 अगस्त 2020 को नई शिक्षा नीति 2020 को कैबिनेट से मंजूरी प्रदान कर दी तथा शिक्षा पर कुल सकल घरेलू उत्पाद का 6: खर्च करने के लिए शिक्षा मंत्री श्री गोविंद सिंह ठाकुर के नेतृत्व में टास्क फोर्स के गठन का निर्णय भी लिया। हिमाचल जैसे पहाड़ी प्रदेश में उच्च शिक्षा के संस्थानों की बहुत कमी है। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समर हिल तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में हजारों डिग्री धारक छात्र हर वर्ष उच्च शिक्षा के लिए आवेदन करते हैं लेकिन सीटों की संख्या कम होने के कारण उन्हें निराश होना होना पड़ता है।

हिमाचल प्रदेश में टैलेंट की कमी नहीं है। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली नेट की परीक्षा में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अभ्यर्थी हर वर्ष प्रदेश का नाम रोशन करते हैं लेकिन नेट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद भी उन्हें उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश नहीं मिल पाता। यही कारण है कि हिमाचल प्रदेश शोध के क्षेत्र में एक पिछड़ा हुआ राज्य है। शोध से ही नवीन जानकारियां प्राप्त की जा सकती है जो कि लंबे समय से चली आ रही समस्याओं से निजात देने में भी सहायक सिद्ध होती है। ऐसे में प्रदेश सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति को मंजूरी देना प्रदेश के हजारों विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के नवीन द्वार खोल सकता है। हिमाचल प्रदेश का वातावरण पढ़ाई के लिए उत्कृष्ट व सर्वोपरि है। यहां पर बाहरी राज्यों के विद्यार्थियों को भी उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है लेकिन सरकार को उच्च शिक्षण संस्थानों में बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर तथा फैकल्टी की व्यवस्था करनी होगीस उच्च शिक्षा की पहुंच व सुगमता से प्रदेश उन्नति के नवीन मार्ग प्रशस्त करेगा। ◆◆◆

नई शिक्षा नीति-प्रभावी शिक्षक प्रभावशाली शिक्षा

... सुरेन्द्र कुमार

देश की शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदीं की जरूरतों के अनुरूप ढालना सरकार के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। लेकिन देश के प्रबुद्ध शिक्षाविदों और कुशल प्रशासकों ने इसे कर दिखाया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के ड्राफ्ट को अंतिम रूप देना और उसे केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी प्रदान करना वास्तव में सहज कार्य नहीं था। दशकों से 21वीं सदीं की आवश्यकताओं को पूरा करने व युवाओं को समर्थ बनाने हेतु नई शिक्षा नीति की कमी महसूस हो रही थी। विगत 34 वर्षों से गतिमान हमारी शिक्षा व्यवस्था में बीते एक दशक से अनेकों त्रुटियां पनपती ही जा रही थी। फलस्वरूप बीते कुछ वर्षों से शिक्षा मंत्रालय नई शिक्षा नीति पर गहन चिंतन कर रहा था। एक मैराथन मंथन के उपरांत आखिरकार मंत्रालय ने शिक्षा नीति 2020 की ऐतिहासिक घोषणा कर ही दी।

शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट किया गया है कि आगामी दो दशक तक देश में योग्य अध्यापकों की नियुक्ति पर बल दिया जाएगा। अध्यापक भर्ती प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने हेतु अनेकों प्रबंधन किए जाएंगे। शिक्षकों को भावी भविष्य में इस कद्र प्रशिक्षित किया जाएगा कि वह अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह बेहतरीन ढंग से कर सकें। नई सिफारिशों के तहत शिक्षकों की नियुक्तिमें स्थानीय भाषा शैली में अध्यापक की पारंगता को प्रमुखता दी जाएगी। सरकार गांवों में आवासीय पाठशालाएं शुरू करेगी। इसी तरह शिक्षकों की कार्य कुशलता में बढोत्तरी करने के लिए स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यशालाओं का आयोजन करने का प्रावधान किया गया है। अध्यापकों को समग्र व्यवसायी विकास कार्यक्रम के तहत वर्ष में 50 घंटे का प्रशिक्षण अनिवार्य होगा तथा प्रत्येक शिक्षक को कम्प्यूटर व इंटरनेट के इस्तेमाल के प्रति प्रोत्साहित किया जाएगा। शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक भर्ती नियमों को पारदर्शी बनाने के लिए भी कडें प्रावधान किए गए हैं। नएं नियमों के अंतर्गत कक्षा पहली से कक्षा बाहरवीं तक के अध्यापकों को अब टीईटी के साथ नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए परीक्षा भी उतीर्ण करनी होगी। इसके बाद शिक्षकों को लिखित परीक्षा से गुजरना होगा।

लिखित परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों को साक्षात्कार व डेमो शिक्षण से गुजरना होगा। नई प्रणाली में अध्यापकों को गैर शिक्षण कार्यों से मुक्त करने की स्तुति भी की गई है। इतना ही नहीं शिक्षकों को अपडेट करने के लिए एनसीईटी व एनसीईआरटी के सहयोग से नेशनल कुरिकुलम फॉर टीचर एजुकेशन का गठन किया जाएगा ताकि राष्ट्र निर्माताओं की कार्य कुशलता में कोई कसर न रह सके। शिक्षकों की कार्य क्षमता में वृद्धि करने लिए वर्ष 2022 तक नेशनल प्रोफेशनल स्टैण्डर्ड फॉर टीचर्स ट्रेनिंग को गठित करने की सिफारिश की गई है। ताकि अध्यापकों की नियुक्ति वेतन, पदोन्नति आदि की सुनिश्चितता, उसकी कार्यक्षमता के आधार पर तय की जा सकें। इसी तरह वर्ष 2030 के उपरांत केवल वही प्रशिक्षित अभ्यर्थी शिक्षक बनने का सपना देख पाएगा जिसने कम से कम चार वर्षीय बीएड इंटीग्रेटेड डिग्री उतीर्ण की हो। इसी प्रकार नई व्यवस्था के तहत आंगनबाड़ी में कार्यरत 12वीं पास कार्यकर्ताओं को ईसीसीई के अंतर्गत छह माह का प्रशिक्षण व इससे कम शिक्षित कार्यकर्ताओं को एक वर्षीय विशेष डिप्लोमा करवाने की अनुशंसा की गई है। जबकि दिव्यांगों को पढाने वाले अध्यापकों को भी मंत्रालय अतिरिक्त प्रशिक्षण करवाएगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नई शिक्षा नीति के व्यवहार से शिक्षकों की जिम्मेदारियों में बढोत्तरी के साथ-साथ अध्यापकों को व्यक्तिगत रूप से अनगिनत प्रतिफल हासिल हो सकतें हैं।

नई प्रणाली के क्रियान्वयन से शिक्षकों को बेवजह तबादलों की खातिर दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर नही होना पडेगा। अब ट्रांसफर का भय अध्यापकों को नहीं सताएगा। क्योंकि तबादलों को एक निश्चित अवधि के उपरांत पारदर्शी प्रक्रिया के अंतर्गत किया गया है। नई शिक्षा नीति में स्पष्ट किया गया है कि जब तक देश का शिक्षक संतुष्ट नहीं होगा तब तक देश में हजारों कॉलेज व विश्वविद्यालय खोलने का कोई औचित्य नही होगा। इसलिए अब मंत्रालय ने निश्चित किया है कि देश में नये शिक्षण संस्थान तभी खोले जाएंगे जब विभाग के पास पर्याप्त शिक्षक हों। इतना ही नहीं नई व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षकों के प्रशिक्षण, सेवाकाल, वेतन भत्ते, पदोन्नति, आवासीय सुविधओं के साथ-साथ अन्य सहुलियतों पर भी बल दिया गया है। अत: उम्मीद है कि नई शिक्षा प्रणाली देश के शैक्षणिक माहौल को अनुकूलित बनाने में सफल होने के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति में भी विशेष योगदान देगी तथा साथ ही भावी भविष्य में भारत को दुनिया में शिक्षा का सिरमौर बनाएगी। ◆◆◆

नई शिक्षा नीति

से बदलेगी देश की तस्वीर

... राजेश वर्मा

प्रदेश में मंत्रिमंडल के विस्तार व फेरबदल होने के साथ ही प्रदेश में कर्मचारियों की संख्या के लिहाज से सबसे बड़े शिक्षा विभाग की बागडोर युवा मंत्री गोविंद सिंह ठाकुर के हाथों में आ गई। इन्होंने आते ही नई शिक्षा नीति पर अपनी सकारात्मक राय रखते हुए साफ कहा कि हिमाचल प्रदेश देशभर में पहला ऐसा राज्य होगा जो नई शिक्षा नीति को लागू करेगा। लगभग दो लाख सुझाव मिलने के बाद केंद्र सरकार ने 29 जुलाई को नई शिक्षा नीति पर मोहर लगा दी। किसी भी देश व देशवासियों के संपूर्ण विकास की बुनियाद शिक्षा ही होती है। इसी बुनियाद को मजबूत करने के लिए नई शिक्षा नीति 10+2 के फार्मेट को पूरी तरह खत्म करते हुए 5+3+3+4 के आधार पर देश भर में लागू होगी। बच्चों में मौलिकता को बनाए रखने के लिए शिक्षा नीति में सरकारी व निजी विद्यालयों में भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ाई पर जोर दिया गया है।

वैश्विक दृष्टि से देखा जाए तो जापान, सिंगापुर, हांगकांग ,चीन आदि की शिक्षा प्रणाली हमारे देश से कहीं बेहतर है। जापान आज अपनी शिक्षा प्रणाली के कारण ही विश्व में शिक्षा का गुरु कहलाता है। वहां की शिक्षा प्रणाली 6+3+3+4 पर आधारित है, 6 साल प्राथमिक शिक्षा, 3 साल जूनियर हाईस्कूल, 3 साल सीनियर हाईस्कूल और 4 साल यूनिवर्सिटी। वहां नैतिकता व तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया जाता है। 3 से 8 साल तक की आयु के बच्चे प्राथमिक से लेकर दूसरी कक्षा पूरी करेंगे। इसे फाउंडेशन स्टेज कहा है, पहले तीन साल बच्चे आंगनबाड़ी में प्री-स्कूलिंग शिक्षा लेंगे व इसके बाद दो साल बच्चे स्कूल में पहली व दूसरी कक्षा पूरी करेंगे। इस स्टेज में पठन-पाठन के परम्परागत बोझ से अलग पाठ्यक्रम होगा जो क्रिया-कलाप आधारित शिक्षण से युक्त होगा, इसके बाद आएगी प्रीप्रेरेटरी स्टेज जिसमें 11 साल तक के उम्र के बच्चे कक्षा तीन से पांच तक विज्ञान, गणित व कला आदि विषयों की पढ़ाई करेंगे। नई शिक्षा नीति में बचपन को बचाते हुए आगे बढ़ने की बात कही गई है। मिडिल स्टेज में 11-14 साल की आयु के बच्चे कक्षा 6-8 तक विषय आधारित पाठ्यक्रम की पढ़ाई करेंगे। रोजगार की दृष्टि से भी इस शिक्षा नीति में कई प्रावधान हैं।

वर्ष 2025 के अंत तक नई शिक्षा नीति के अंतर्गत कम से कम 50 प्रतिशत छात्रों को वोकेशनल स्टडीज पढ़ाने का लक्ष्य निर्धरित किया गया है। ऐसे ही बच्चों के लिए है कक्षा नौवीं से ही विषयों को चुनने की आजादी मिलती है जिसे सेकेंडरी स्टेज कहा गया है। कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी अब पहले की तरह कक्षा 11 से साइंस, कॉमर्स तथा आर्ट्स स्ट्रीम लेने के लिए बाध्य नहीं है, अब विद्यार्थियों को साइंस के साथ कॉमर्स का या फिर कॉमर्स के साथ आर्ट्स के विषय लेने की भी आजादी होगी। ◆◆◆

ऑनलाइन इण्टरनेशनल प्राइमरी मैथमेटिक्स कन्वेन्शन

सिटी मोन्टेसरी स्कूल, गोमती नगर (प्रथम कैम्पस)) द्वारा ऑनलाइन आयोजित दो दिवसीय इण्टरनेशनल प्राइमरी मैथमेटिक्स कन्वेन्शन (आई.पी.एम.सी.-2020) सम्पन्न हो गया। इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश-विदेश के प्रतिष्ठित विद्यालयों की चार अन्तर्राष्ट्रीय छात्र टीमों, तीन राष्ट्रीय छात्र टीमों एवं 20 स्थानीय छात्र टीमों ने बड़े उत्साह से ऑनलाइन प्रतिभाग कर अपने मेधत्व एवं गणित ज्ञान का जोरदार प्रदर्शन किया। यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता प्राइमरी वर्ग के छात्रों के लिए आयोजित हुई। आई.पी.एम.सी.-2020 के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि श्री पंकज कुमार, डी.जी.एम., एन.टी.पी.सी. ने देश-विदेश के प्रतिभागी छात्रों को आशीर्वाद दिया तथापि सी.एम.एस.। प्रेसीडेन्ट प्रो. गीता गांधी किंगडन एवं सी.

एम.एस.के डायरेक्टर आफॅ स्ट्रेटजी, श्री रोशन गांधी ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा को बढ़ाया एवं देश-विदेश के प्रतिभागी छात्रों की हौसला अफजाई की।। प्रतियोगिता का प्रारम्भिक राउण्ड बहुविकल्पीय प्रश्नों पर आधरित रहा, जिसमें गणित की विभिन्न विधाओं से प्रश्न पूछे गये। पहले राउण्ड में देश-विदेश की 27 छात्र टीमों ने प्रतिभाग किया, जिनमें से मात्र 6 टीमों को फाइनल राउण्ड की क्विज प्रतियोगिता हेतु चयनित किया। अन्त में तीन टीमों के बीच विजेता व उप-विजेता का चुनाव करने के लिए टाईब्रेकर का सहारा लेना पड़ा। प्रतियोगिता में सी।एम।एस। अलीगंज (द्वितीय कैम्पस) की टीम ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि डेलही पब्लिक स्कूल, जानकीपुरम, लखन एवं सी.एम.एस. स्टेशन रोड कैम्पस की टीम क्र मशः दूसरे व तीसरे स्थान पर रही। प्रतिभागी छात्र टीमों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आई.पी.एम.सी.-2020 की संयोजिका एवं सी.एम.एस। गोमतीनगर (प्रथम कैम्पस) की प्रधानाचार्या श्रीमती आभा अनन्त ने सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। ◆◆◆ **हरि ओम शर्मा, मुख्य जन-सम्पर्क अधिकारी सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ**

चीन बातचीत से नहीं माना तो सैन्य विकल्प मौजूद

पूर्वी लद्दाख में चीन से जारी तनातनी के बीच चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ सीडीएस जनरल बिपिन रावत ने बड़ा बयान दिया है। जनरल रावत ने सोमवार को दो टूक कहा, वास्तविक नियंत्रण रेखा एलएसी पर चीनी सैनिकों को घुसपैठ से निपटने के लिए ठोस सैन्य रणनीति तैयार है, लेकिन उस पर अमल तभी किया जाएगा, जब सैन्य व राजनयिक

स्तर पर दोनों देशों के बीच बातचीत विफल होती है। जनरल रावत ने कहा, एलएसी पर विवाद का मूल कारण नियंत्रण रेखा को लेकर भारत व चीन का अलग-अलग नजरिया है। सेना की जिम्मेदारी है कि वह इसकी आड़ में दुश्मन की घुसपैठ रोके। इसके लिए कूटनीतिक स्तर पर भी कोशिशें चलती रहती हैं।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, एनएसए अजीत डोभाल और तीनों सेनाएं देश की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार हैं और वे सभी विकल्पों पर काम कर रही हैं। दरअसल, पूर्वी लद्दाख के फिंगर एरिया, गलवां वैली, हॉट स्प्रिंग और कोंगुरूंग नाला में चीनी सेना के अतिक्रमण को लेकर दोनों देशों के बीच अप्रैल से ही गतिरोध बरकरार है। ◆◆◆

कोरोना टेस्टिंग में भारत तीसरे स्थान पर

दिव्य हिमाचल: भारत के कोरोना वायरस टेस्ट करने के मामले में तीसरा स्थान हासिल कर लिया है। अब चीन और अमरीका ही वे देश हैं, जहां हमसे ज्यादा आबादी का टेस्ट हो चुका है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने कहा कि पहली बार एक दिन में दस लाख से ज्यादा टेस्ट किए गए। देश में अब तक साढ़े तीन करोड़ से ज्यादा टेस्ट हुए हैं। कोविड टेस्ट करने वाली लैब्स की संख्या अप्रैल में 12 के मुकाबले 1515 हो गई थी। टेस्टस में 28 पर्सेंट रैपिड एंटीजेन टेस्ट थे। ◆◆◆

कोरोना के बाद सिनेमा और संभावना

हिम सिने सोसायटी और भारतीय चित्र साधना द्वारा संयुक्त रूप से कोराना के बाद सिनेमा और संभावनाएं विषय पर एक फेसबुक लाईव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एनिमेशन फिल्म मेकर श्रीमती ध्वनि देसाई एवं आकाश आदित्य लामा फिल्मकार, नाटककार व स्क्रिप्ट राईटर रहे।

आकाश आदित्य लामा संवाद स्क्रिप्ट राईटर, फिल्म मेकर और नाटककार हैं। ये गदर फिल्म के सह निर्देशक रहे हैं। इसके अलावा इनकी एक फिल्म सिगरेट की तरह भी काफी चर्चा में रही है। इनकी फिल्म तौबा तेरा जलवा भी जल्द ही दर्शकों को देखने को मिलेगी। ध्वनि देसाई ने एनिमेशन के क्षेत्र में आने वाले विद्यार्थियों और फिल्म मेकर्स का मार्गदर्शन किया और उन्हें कहा कि इस क्षेत्र में आपार संभावनाएं हैं, नित नई टैक्नोलॉजी आने के फलस्वरूप बदलाव हो रहे हैं। जिसके चलते हमें घर पर रहते हुए भी नई टैक्नोलॉजी से अपडेट होते रहना चाहिए। परिचर्चा के दौरान आकाशआदित्य ने सिनेमा से जुड़े सभी विद्यार्थियों, सिनेमा से जुड़े लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि लघु बजट में सिनेमा की आपार संभावनाएं हैं।

इस अवसर पर श्री के.डी. श्रीधर अध्यक्ष हिम सिने सोसायटी ने मुख्य वक्ताओं का धन्यवाद किया और कोरोना के समय सिनेमा की संभावनाओं पर वक्ताओं के मार्गदर्शन और दर्शकों का भी आभार जताया। इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन हिम सिने सोसायटी की उपाध्यक्षा भारती कुठियाला और सोसायटी के सचिव संजय सूद ने किया।◆◆◆

दिल्ली दंगों के पीछे जेहाद को पदार्पफाश करती "Delhi Riots 2020"

Bloomsbury India ने दिल्ली दंगों पर एडवोकेट मोनिका अरोड़ा और उनकी टीम द्वारा जमीनी स्तर पर की गई जांच पड़ताल पर रिपोर्ट को किताब के रूप में छापने का करार किया। इस किताब का आज लोकार्पण होना था परंतु वामपंथी गिरोहों के द्वारा इस किताब को छपने से रोकने का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किया गया। ब्लूम्सबरी एक अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन समूह है और वामपंथी गिरोहों और भारत विरोधी अंतरराष्ट्रीय गिरोह के दबाव में आकर उन्होंने करार खत्म करने की घोषणा की और किताब छापने से मना कर दिया। ट्विटर पर पूरी कोशिश हुई दबाव बनाने की जिसमें मिशनरी, वामपंथी गिरोहों और राणा अयूब, स्वरा भास्कर, अर्फा खानूम शेरवानी इत्यादि जैसे लेखकों का गिरोह का सरगना जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल का

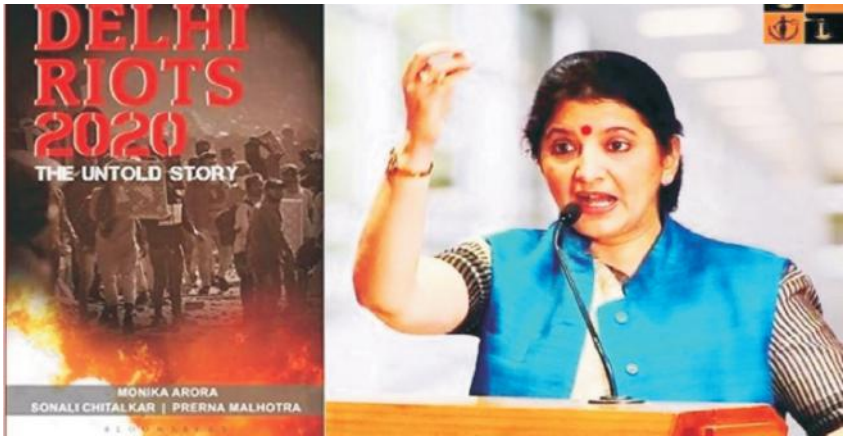

निर्देशक विलियम डेलरिम्पल इस गिरोह का सरगना बताया जा रहा है। जिसके इशारे पर यह सब कुछ हुआ है। अभिव्यक्ति की आजादीश की तख्ती सबसे पहले जो तैयार रखते हैं उनको ही अभिव्यक्ति से भय रहता है। आखिर में पुस्तक के हिंदी और अंग्रेजी प्रकाशन की जिम्मेदारी राष्ट्रवादी गरुड़ प्रकाशन को दी गई। इसी प्रकाशन से पूर्व में फिल्म निर्देशक विवेक अग्निहोत्री की 'अर्बन नक्सल' पुस्तक प्रकाशित हुई थी। 24 घंटे में प्रकाशक को 15000 प्रतियों का आर्डर मिल गया। उनकी वेबसाइट ही अत्यधिक ट्रैफिक के कारण काम करना ही बंद कर गई।◆◆◆

आपातकाल में सेवा करते स्वयंसेवक

संघ के स्वयंसेवकों ने अथक परिश्रम करते हुए अपना व्यापार और नौकरियां छोड़कर बस्ती में सेवा कार्य किए। स्वयंसेवकों ने श्रमदान कर कई घरों के अंदर भर चुकी करीब 5-6 फीट मिट्टी को बाहर निकलवाया। अगले दिन जब स्वयंसेवकों को पता लगा की महिलाओं और बच्चों के पास पहनने को कपड़े तक नहीं हैं और वे सभी उन्हीं कपड़ों में हैं जो कल बारिश के समय भीग गए थे, तो स्वयंसेवकों ने कपड़े एकत्रित कर लोगों को दिए। सुबह-शाम लोगों को भोजन कराया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जयपुर महानगर के सह प्रौढ़ कार्यवाह राजकुमार गुप्ता ने बताया कि बारिश रूकने के बाद शाम 5.45 बजे हमने स्वयंसेवकों को एकत्रित कर श्रमदान व सेवा कार्यों के बारे में बताते हुए निर्देश दिए। बस्ती की स्थिति सुनने मात्र से सभी स्वयंसेवकों में कार्यकर्ताओं में सेवा का इतना भाव भरा था कि महज आधे घंटे में बस्ती के लोगों के लिए भोजन बनाकर एकत्रित कर लिया। इस क्षेत्र में लोगों को सबसे अधिक

आवश्यकता भोजन, पानी, और कपड़ों की थी। जीवनयापन के सारे साधन खत्म हो चुके थे।

आरएसएस के मीडिया सेंटर विश्व संवाद केन्द्र से जुड़े प्रशिक्षु पत्रकार लक्षित बताते हैं कि, संघ का समाज के लिए योगदान हर प्रकार की लड़ाई में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमेशा रहा है। स्वयंसेवकों ने नि:स्वार्थ भाव से समाज में जो सेवा कार्य किए हैं वो अविस्मरणीय हैं। ऐसे जज्बे और समाज सेवा के जुनून के साथ देश हर मुश्किल और परेशानी झेल सकता है।

वहीं स्थानीय निवासी गणेश खींची ने बताया कि संघ के कार्यकर्ताओं ने जिस जोश और स्फूर्ति से बस्ती में काम किया वो उल्लेखनीय है। समाज के लिए हमेशा तत्पर खड़े रहने वाले संघ और उसके कार्यकर्ताओं के कारण आज कई लोग अच्छी जिदंगी जी पा रहे हैं। समाज में सेवा देना कोई सेवा कार्य नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्तिका कर्तव्य है।◆◆◆

हवाला कारोबारी से जुड़े तिब्बती नागरिक के तार

फर्जी नाम और पासपोर्ट पर भारत में रहकर हवाला कारोबार में लिप्त चीनी नागरिक चार्ली पेंग लुओ संग के तार जासूसी प्रकरण से भी जुड़ रहे हैं। जासूसी का नेटवर्क देशभर में फैला हुआ था। दलाई लामा की जासूसी के संबंधा में पुलिस ने हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला के चौंतड़ा में ट्रांजिट तिब्बती स्कूल में कार्यरत शिक्षक को हिरासत में लिया है। तीन अन्य संदिग्धों से भी पूछताछ की जा रही है। शिक्षक के खाते में लाखों रुपये की राशि जमा हुई थी, जो अनेक लोगों में बांटी गई है। कहा जा रहा है कि शिक्षक दिल्ली में पकड़े गए चीनी नागरिक के हैंडलर के रूप में कार्य कर रहा था। चौंतड़ा के एक तिब्बती स्कूल शिक्षक ने हवाला से आये पैसे को कई लोगों को बांटा था। एजेंसियां मामले की कड़ियां जोड़ने में जुटी हैं तथा यह जानकारी जुटाई जा रही है कि तिब्बती शिक्षक मोहरे के रूप में उपयोग किया जा रहा था या सीधे जासूसी में लिप्त है।

गिरफ्तार आरोपी शिक्षक उसी स्कूल में विद्यार्थी रहा है। 15 साल से चौंतड़ा में रह रहा था। उसके बैंक खाते में लाखों रुपये की राशि आई है, जो अलग-अलग लोगों को दी गई है। आईबी अधिकारियों ने द्विभाषिये की सहायता लेकर शिक्षक से पूछ-ताछ की। शिक्षक के खाते में कफी लम्बे समय से पैसा आ रहा था। दिल्ली में पकड़े गये चीनी जासूस के तार अब धर्मशाला के मैक्लोडगंज से जुड़े हैं। पुलिस ने चीनी मूल की एक जर्मन महिला को भी पूछ-ताछ के लिए हिरासत में लिया है।

करीब पांच साल पहले महिला जर्मनी से अपनी दो बेटियों के साथ धर्मशाला आई थी। उसने बेटियों का स्टडी वीजा बनवाया था, जबकि अपना टूरिस्ट वीजा। उसके बाद औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद वह यहीं रह रही है। हैरानी की बात यह है कि महिला ने अपने लिए मैक्लोडगंज के भागसूनाग में किराये का मकान लिया था, जबकि बेटियों के लिए बीड़ में किराये पर मकान की व्यवस्था की थी। ◆◆◆

हिमाचल का पारंपरिक डैगेली पर्व

... गोपाल दत्त शर्मा

हिमाचल प्रदेश को पूरी दुनिया मे देव भूमि के नाम से जाना जाता है। प्रदेश मे अनेकों ऐसी परंपराऐं, रीति -रिवाज, प्रथाऐं एवं त्यौहार हैं जो बड़ी आस्था के साथ मनाये जाते हैं। इन्ही में से डगैली पर्व भी एक है जो हिमाचल प्रदेश के सिरमौर, शिमला, मंडी, सोलन, कुल्लू आदि के ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़कर कहीं और नही मनाया जाता है। डगैली का अर्थ है डायनों का पर्व, इसे यहां डर के कारण या आस्था के कारण क्यूं मनाया जाता है, इसका कोई स्पष्ट प्रमाण देखने को नही मिलता। कुछ क्षेत्रों में यह डरावना पर्व श्री कृष्ण जन्माष्टमी की रात्रि को तथा कुछ क्षेत्रों में इसके ठीक छह दिनों के बाद भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की चर्तूदशी व अमावस्या के दिन मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है इन दोनों रात्रि को डायनें, भूत, पिशाच खुला आवागमन तथा नृत्य करते हैं। इस दृष्य को कोई आम आदमी नहीं देख सकता है। इसे केवल तांत्रिक तथा देवताओं के गुर ही देख सकते हैं। इस दिनों डायनों व भूत-प्रेतों को खुली छूट होती है वह किसी भी आदमी व पशु आदि को अपना शिकार बना सकती हैं। इसके लिए लोग पहले ही यहां अपने बचने का पूरा प्रबंध यानि सुरक्षा चक्र बना कर रख लेते हैं। इन सुरक्षा प्रबंधों की तैयारियां यहां पर रक्षा बंधन वाले दिन से आरंभ हो जाती हैं। रंक्षा बंधन वाले दिन जौ रक्षा सूत्र पुरोहितों द्वारा अपने यजमानों को बांधा जाता है। उसे डगैली पर्व के बाद ही खोला जाता है। इसके साथ-साथ उसी दिन पुरोहित द्वारा अभिमंत्रित करके दिये गये चावलों या सरसों के दानों के साथ-साथ अपने कुल देवता के गुर द्वारा दिये गये रक्षा के चावल के दानों को डगैली पर्व से ठीक पहले अपने घरों, पशुशालाओं व खेतों में छिडक दिया जाता है ताकि उनको घरों में परिवार के सभी सदस्य पशु शाला में पशुओं व खेतों मे फसलों को डायनें किसी प्रकार का नुकसान ना पंहुचा सके। इसके अलावा भेखल की झाड़ी की टहनियों को दरवाजे व खिडकियों मे लगाया जाता है। पहली डगैली की रात्रि को सोने से पहले दरवाजे पर खीरा यानि काकड़ी की बलि व दूसरी डगैली की रात्रि को अरबी के पत्तों से बने व्यंजन धीधडे की बलि दी जाती है ताकि बुरी शक्तियां उनके घरों में प्रवेश ना कर सकें। आज के आधुनिक व वैज्ञानिक युग मे ऐंसे त्यौहारों व प्रथाओं पर विश्वास करना कठिन है मगर यहां यह पर्व आस्था या फिर डर किस कारण से मनाया जाता है इसके पीछे कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता फिर भी इस पर्व को सैकडों सालों से मनाया जाता है। ◆◆◆

चीन में नहीं हिमाचल में निवेश करेगी माइक्रोटैक

कोरोना संकट के कारण चीन से पलायन करने वाले औद्योगिक घराने अब हिमाचल प्रदेश का रूख करने लगे हैं। इस कड़ी के तहत मैसर्ज माइक्रोटैक न्यू टैक्नोलॉजिस प्राइवेट लिमिटेड ने राज्य में निवेश को प्राथमिकता दी है। कंपनी ने मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर की उपस्थिति में प्रदेश सरकार के साथ 110 करोड़ रूपए के समझौते पर भी हस्ताक्षर किए हैं। मैसर्ज माइक्रोटैक न्यू टैक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड नाम की यह कंपनी सोलन जिला के बद्दी में थार्मामीटर, ऑनलाइन-ऑफलाइन यू.पी.एस, उच्च क्षमता वाले इन्वर्टर्ज, ऑक्सीमीटर और अन्य विद्युत उत्पादों की विनिर्माण इकाई को स्थापित करेगी। निदेशक उद्योग हंसराज शर्मा ने प्रदेश सरकार की ओर से और माइक्रोटैक न्यू टैक्नोलॉजिस प्राइवेट लिमिटेड के अध्यक्ष सबोध गुप्ता के साथ इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह इकाई मार्च, 2021 तक बनकर तैयार हो जाएगी, जिसमें 450 लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। इस दौरान कंपनी के अध्यक्ष सुबोध गुप्ता ने मुख्यमंत्री को 1 हजार थर्मल थर्मामीटर भी भेंट किए। उद्योग मंत्री विक्रम सिंह और मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव जे.सी. शर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे। मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव जे.सी. शर्मा ने संपर्क करने पर बताया कि कंपनी पहले चीन में निवेश करने वाली थी, लेकिन बदले माहौल में यह प्रदेश में अपनी इकाई को स्थापित करेगी। उन्होंने कहा कि इससे प्रदेश के लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। प्रदेश सरकार कोविड-19 के कारण चीन से पलायन करने वाले औद्योगिक घरानों के लिए निवेश के लिए अनुकूल माहौल तैयार कर रही है।◆◆◆

MICROTEK
DIGITAL INVERTER

गौवंश के पालन पोषण के लिए सरकार करेगी आर्थिक मदद

प्रदेश में अब कोई भी गोवंश सडकों पर बेसहारा नहीं घूमेगा। प्रदेश सरकार ने सडकों पर घूमने वाले इन सभी बेसहारा पशुओं को प्रदेश भर में गौशाला के अलावा सरकार की ओर से हर जिले में संचालित अभ्यारण्य क्षेत्र में रखा जाएगा। यहां पर सरकार की ओर से 500 रुपए प्रति गाय के हिसाब से खर्चा दिया जाएगा। जिससे इन पशुओं को पालन-पोषण की चिंता अब नहीं रहेगी। प्रदेश भर में तीस हजार गौवंश है। जिसमें 14 हजार गौवंश गौशाला व अभ्यारण्य क्षेत्र में पल रहे है। जबकि 16 हजार गौवंश सड़कों पर बेसहारा घूम रहा है। इन पशुओं को अब विभाग गौशाला व अभ्यारण्य क्षेत्र में रखा जाएगा। हिमाचल में 192 गौशालाए हैं। प्रदेश में सिरमौर के कोटला बड़ोग का वन्य अभ्यारण क्षेत्र को चालू कर दिया है। सोलन के हांडा कुंडी, ऊना के थानाकलां व हमीरपुर की खैरी वन्य अभ्यारण्य क्षेत्र को तीन माह के भीतर चालू कर दिया जाएगा। कांगड़ा के लोथान, खबल, कगेण तथा कुठन में वन्य क्षेत्र के लिए जमीन विभाग के नाम हो गई है जहां पर जल्द ही कार्य चालू कर दिया जाएगा। मंडी व बिलासपुर जमीन का मामला एफसीए के पास विचाराधीन है। जैसे ही जमीन विभाग के नाम होती है तो वहां पर

काम शुरू कर दिया जाएगा। गौ सेवा आयोग के उपाध्यक्ष अशोक शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर गौवंश के लिए उपयोगी इस योजना का शुभारंभ करेंगे। उन्होंने कहा कि अब कोई भी गौवंश सडकों पर नहीं दिखेगा। उन्होंने लोगों से अधिक से अधिक सहयोग की अपील की। भाजपा नेता प्रेम गौतम ने कहा कि सनातन धर्म में जब की गौवंश के उत्थान की बात होगी तो जयराम ठाकुर का नाम अवश्य लिया जाएगा। उन्होंने सरकार बनाते ही गौ संवर्धन बोर्ड का गठन कर अशोक शर्मा जैसे गौ सेवक को इसका उपाध्यक्ष बनाया। अभी तक जो गौवंश सडकों पर घूमता था अब उसे लोग आवार पशु का नाम से नहीं जानेगे।

अब गौ माता को लोग आदर की दृष्टि से देखेंगे।हरे कृष्णा गौशाला में अब और गौवंश रखे जाएंगे। कृष्ण जन्माष्टमी को इस बार हवन ही होगा। सरकार की ओर से वित्तीय सहायता मिलने का बाद बददी के मलकू माजरा स्थित हेर कृष्णा गौशाला में अब 400 पशु बढ़ाकर एक हजार कर दिया जाएगा। बीबीएन में अब कोई भी गौवंश सडकों पर घूमता नजर नहीं आएगा।

अक्तूबर से पहले पहले सभी पशुओं को गौशाला व वन्य अभ्यारण्य क्षेत्रें में पहुंचा दिया जाएगा। इस वर्ष कोरोना महामारी के चलते गौशाला में भंडारा व भजन कीर्तन का आयोजन नहीं होगा। केवल कमेटी के कुछ सदस्य सोशल डिस्टेंस का पालन करते हुए हवन का आयोजन करेगे। यह जानकारी गौशाला के संयोजक अशोक शर्मा ने दी।◆◆◆

नई तकनीक से सैटलाइट की तस्वीरें अब दिखेंगी साफ

सैटेलाइट से देश की निगरानी करने का रक्षा तंत्र अधिक मजबूत होगा। चीन के साथ चल रही तनातनी के बीच आईआईटी मंडी के शोधकर्ताओं ने गणित मॉडल का इस्तेमाल कर सैटेलाइट और विभिन्न इमेजिंग सिस्टम के इमेज की गुणवता बढ़ाने की तकनीक ईजाद की है। इसमें इमेज एक इलास्टिक शीट के रूप में दिखाई देगी। इसे दबाने पर स्पेकल्स यानी जूम या अंधेरे में आने वाले धब्बे दूर होंगे। इमेज काफी हद तक साफ दिखेगी। इस कार्य के परिणाम सोसाइटी फॉर इंडस्ट्रियल एंड एप्लाइड मैथेमेटिक्स एसआईएएम जर्नल ऑफ इमेजिंग साइंसेज में प्रकाशित किए हो चुके हैं। आईआईटी मंडी के स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेज के एसोसिएट प्रो। डॉ राजेन्द्र कुमार रे के नेतृत्व में शोधकर्ताओं के स्पेकल्स को दूर करने के लिए गणितीय विधियों का उपयोग किया। उन्होंने कहा कि शोधकर्ताओं ने गणित मॉडल अध्ययन कर विभिन्न इमेजिंग सिस्टम के इमेज की गुणवता बढ़ाई है। इसमें चिकित्सा, सैन्य तथा अन्य क्षेत्रों में सैटेलाइट व अन्य स्त्रोतों की ओर से खींची गई तस्वीरों का बेहतर ढंग से देखना आसान होगा। **अमर उजाला:** ◆◆◆

वर्ग जातिहीन और संघर्ष मुक्त सामाजिक व्यवस्था

... प्रो. (डॉ.) प्रदीप कुमार वैद

दीनदयाल उपाध्याय कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकते। विचार की कभी मृत्यु नहीं हो सकती। उनका दर्शन भारत की प्रकृति से जुड़ा दर्शन है। भारत के युगऋषि दीनदयाल एक उच्च स्थिति प्राप्त निष्काम कर्मयोगी एवं आध्यात्मिक व्यक्ति थे। वे वैयक्तिक जीवन की संकुचिता से उपर उठकर समष्टि के रूप में समाज तथा जिन व्यक्तियों से समाज बना है उन सब से एकात्मक भाव से उत्पन्न निरातिशय प्रेम के कारण सदा सर्वदा तादात्मय की अनुभूतिवान थे। ऐसे विराट के विराट उपासक, राष्ट्र पूजक महनीय व्यक्तित्व कभी पुरातन नहीं होते वे चिरंजीव होते हैं। उनके द्वारा 'एकात्मक मानववाद' एवं 'अन्त्योदय की अवधारणा' सामाजिक एकीकरण एवं सामाजिक विकास की आधारभूमि है। व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण की उनकी अवधारणा युगीन एवं प्रासंगिक है। दीनदयाल के अनुसार, व्यक्ति मन, बुद्धि, आत्मा व शरीर का एक समुच्चय है।

एकात्म मानववाद के वैचारिक सिद्धांत को आत्मसात् करके ही भारतीयता के मूल स्वरूप में मानव कल्याण के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। उनका कहना था 'जो व्यक्ति सबसे निचले पायदान पर है। उसे उठाने के लिए सरकार को कोशिश करनी चाहिए।' इसका आज सफल सरकारी प्रयास प्रधानमन्त्री 'जन-धन योजना' है, और इसके सुखद परिणाम भी प्राप्त होने लगें हैं। 'मेक इन इंडिया' भारत जैसे राष्ट्र को सामरिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की नीति को उदार बनाकर देश में सैन्य सामग्री विनिर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। इस तरह दीनदयाल की 'समग्र दृष्टि' न सिर्फ भारत की वर्तमान चुनौतियों का हल प्रस्तुत करती है बल्कि हर क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने का मार्ग दिखाती है। निश्चित तौर पर दीनदयाल की यह दृष्टि, मार्ग दर्शन, प्रेरणा भावी पीढ़ी एवंम भारतीय राष्ट्रजीवन के क्षेत्र में एक प्रेरणात्मक भूमिका प्रदान करेगी। पंडित जी एक साधारण पुरूष थे और इसी साधारणता ने उनके जीवन को असाधारण कृतित्व का धनी बना दिया। कम बोलना और अधिक सुनना पंडित जी का विशेष गुण था।

उनकी मान्यता थी कि हिन्दू कोई धर्म या सम्प्रदाय नहीं बल्कि भारत की राष्ट्रीय संस्कृति है। दीनदयाल उपाध्याय जितने प्रासंगिक 50 साल पूर्व थे, उससे अधिक प्रासंगिक आज हैं। वे भविष्य द्रष्टा थे उन्होंने कहा था, मैं राजनीति में संस्कृति का राजदूत हूं। इसके मर्म को समझते हुए वर्तमान एंव भावी पीढ़ी को अपना कर्तव्य सुनिश्चित करना होगा। उनकी सोच थी कि अपने राष्ट्र की पहचान को भूलना भारत के मूलभूत समस्याओं का प्रमुख कारण है। परिवार का हित हो तो व्यक्ति अपना हित छोड़ देता है।

समाज का हित हो तो परिवार का हित छोड़ देना चाहिए और यदि देश का हित हो तो समाज का हित छोड़ देना चाहिए। वे मूलगामी विचारों के अभ्यासक थे। 'एकात्मक मानववाद' लोकमान्य तिलक की राजनीति', 'जन संघ का सिद्धांन्त और नीति', 'जीवन का ध्येय', 'राष्ट्र जीवन की समस्याएँ', 'भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा' पुस्तिका लिखकर पंडित जी ने यह बताया कि हिन्दुस्तान की अर्थनीति एकांगी नहीं हो सकती। उन्होंने 'टैक्स या लूट' लिखकर कर प्रणाली की निंदा की। प्रत्यक्ष कर हो या अप्रत्यक्ष, सभी कर वस्तुतः टैक्स के ढांचे को अदूरदर्शी और एकांगी होने के कारण गरीब भारत बनाते हैं।।करारोपण का भारतीय सिद्धान्त तो महाभारत के शान्ति पर्व से लिया जाना चाहिए। जिस प्रकार बछड़ा अपनी माँ का दूध पीते समय थन दबाता है, जीविका भर के लिए दूध निकालता है मगर थन नहीं काटता। भंवरा फूल पर मंडराता है, थोडा-सा रस लेता है मगर फूल को चोट नहीं पहुंचाता है। यही नीति करारोपण की होनी चाहिए कि कर राष्ट्रीय हित में वसूल भी हो और कर-दाता को चोट भी न लगने पाए। अपने दल को सबसे अग्रिम पंक्ति में लाकर खड़ा करने की क्षमता उनके अन्दर थी। आज इसका परिणाम हम स्पष्ट देख भी सकते हैं।

◆◆◆

भारत सरकार देगी 50 लाख डोज का पहला ऑर्डर

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने को कहा, भारत बायोटेक व आईसीएमआर की 'कोवॉक्सिन इसी साल के अंत तक मार्केट में आ जाएगी। सरकार ने 50 लाख वैक्सीन का पहला आर्डर देने की तैयारी कर ली है। सबसे पहले स्वास्थ्यकर्मियों, सुरक्षा बलों और अन्य कोरोना योद्धाओं को यह टीका लगाया जाएगा। हर्षवर्धन ने एक इंटरव्यू में कहा कि भारत में बन रही वैक्सीन के असर का पता साल के अंत तक चल जाएगा। उसके एक महीने बाद से उनका उत्पादन भी शुरू हो जाएगा।

हर्षवर्धन ने यह भी कहा कि स्वास्थ्य मंत्रालय अभी वैक्सीन डोज

खरीदने की योजना बना रहा है। आईसीएमआर ने भारत बायोटेक के साथ एमओयू साइन किया है, ताकि वैक्सीन को उपलब्ध कराने में प्राथमिकता दी जा सके। यदि सफल रहा तो यह वैक्सीन को उपलब्ध कराने में प्राथमिकता दी जा सके। यदि सफल रहा तो यह वैक्सीन भारत सरकार को किफायती और रियासती दरों पर उपलब्ध होगी। इसी तरह के एग्रीमेंट के लिए सीरम इंस्टीटयूट ऑफ इंडिया से भी बातचीत चल रही है। इसी प्रक्रिया के तहत कोविड वैक्सीन पर बने विशेष समूह पिछले दिनों कंपनियों के प्रतिनिधियों से बातचीत की थी।◆◆◆

रूस ने बनाई दूसरी कोरोना वैक्सीन

रूस ने कहा कि उसने दूसरी कोरोना वायरस वैक्सीन बनाने में सफलता हासिल कर ली है। इस वैक्सीन में ऐसा कोई भी साइड इफेक्ट नहीं होगा, जो पहली वैक्सीन में था। इससे पहले रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने 'स्पुतनिक वी' नाम से कोरोना वायरस वैक्सीन बनाने की घोषणा की थी। हालांकि इस वैक्सीन के कई साइड इफेक्ट को लेकर रूस की कड़ी आलोचना हुई थी। रूस ने इस नई वैक्सीन का नाम 'एपिवैक कोरोना' नाम दिया और इसको लेकर संदेह के बादल उमड़ सकते हैं। इससे पहले विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा था कि कोई भी कोरोना वायरस वैक्सीन वर्ष 2021 के पहले नहीं आ पाएगी। रूस 'एपिवैक कोरोना' वैक्सीन का निर्माण साइबेरिया में सोवियत संघ के एक पूर्व टॉप सीक्रेट बॉयोलॉजिकल हथियारों के प्लांट में कर रहा है।

वैज्ञानिकों ने बताया कि रूस की इस नई कोरोना वायरस वैक्सीन का क्लीनिकल ट्रायल पूरा हो गया, लेकिन जिन 57 लोगों को यह वैक्सीन दी गई थी, उन्हें साइड इफेक्ट नहीं हुआ हे। सभी वॉलंटियर बहुत अच्छा महसूस कर रहे हैं। इन लोगों को 23 दिनों तक हॉस्पिटल में रखा गया था, ताकि उनका परीक्षण किया जा सके। खबर के अनुसार सभी वॉलिंटियर अच्छा महसूस कर रहे हैं। इन लोगों को 23 दिनों तक हास्पिटल में रखा गया था, ताकि उनका परीक्षण किया जा सके। कोई भी दुष्प्रभाव अब तक नहीं मिला है। वालंटियर्स को 14 से 21 दिनों के अंदर दो बार इस नई वैक्सीन की खुराक दी गई। रूस की आशा है कि इसे अक्तूबर तक रजिस्टर किया जा सकेगा और नवंबर में उत्पादन शुरू हो जाएगा।◆◆◆

अटल रोहतांग सुरंग गर्व की अनुभूति का अवसर

Atal Rohtang Tunnel के रूप में देश को शीघ्र ही गर्व का एक अवसर मिलने जा रहा है। बहुप्रतीक्षित अटल सुरंग को प्रधानमंत्री अगले माह राष्ट्र को समर्पित कर सकते हैं। हिमालय की पीर-पंजाल रेंज में 11 हजार फीट से अधिक की ऊंचाई पर निर्मित यह विश्व की सबसे लंबी और अत्याधुनिक ट्रैफिक टनल होगी। लेह-मनाली को जोड़ने वाली इस सुरंग का नाम पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति में बीते वर्ष अटल रोहतांग सुरंग अटल टनल रखा गया था। सुरंग के ठीक ऊपर स्थित सेरी नदी के पानी के रिसाव के कारण 4000 करोड़ रुपये की लागत वाली इस परियोजना के निर्माण में लगभग पांच वर्ष का विलंब हुआ। किंतु, अब यह देश के मुकुट की शोभा बनने जा रहा है।

8.8 किलोमीटर लंबी इस सुरंग का निर्माण सीमा सड़क संगठन बीआरओ के जिम्मे था। सुरंग बाहर से जितनी मजबूत है, अंदर से उतनी ही सुरक्षित और सुविधाजनक भी है। अंदर निश्चित दूरी पर सीसीटीवी कैमरे, लाइट सेविंग सेंसर सिस्टम, प्रदूषण प्रबंधन के लिए सेंसर सिस्टम, ऑक्सीजन लेवल को स्थिर रखने के लिए दोनों छोर पर हाई-कैपेसिटी विंड टरबाइन सिस्टम स्थापित किए गए हैं। किसी दुर्घटना के घटित होने की स्थिति में इनसे सुरंग में वाहनों का प्रवेश बंद कर आग पर भी तुरंत काबू पाया जा सकेगा। आग या किसी अन्य कारण से सुरंग में बाधा उपस्थित हो जाने की स्थिति में मुख्य 'लोर सड़क' के नीचे एक वैकल्पिक सुरंग भी बनाई गई है, जो मुख्य सुरंग की तरह ही 8.8 किलोमीटर लंबी है। बचाव सुरंग तक

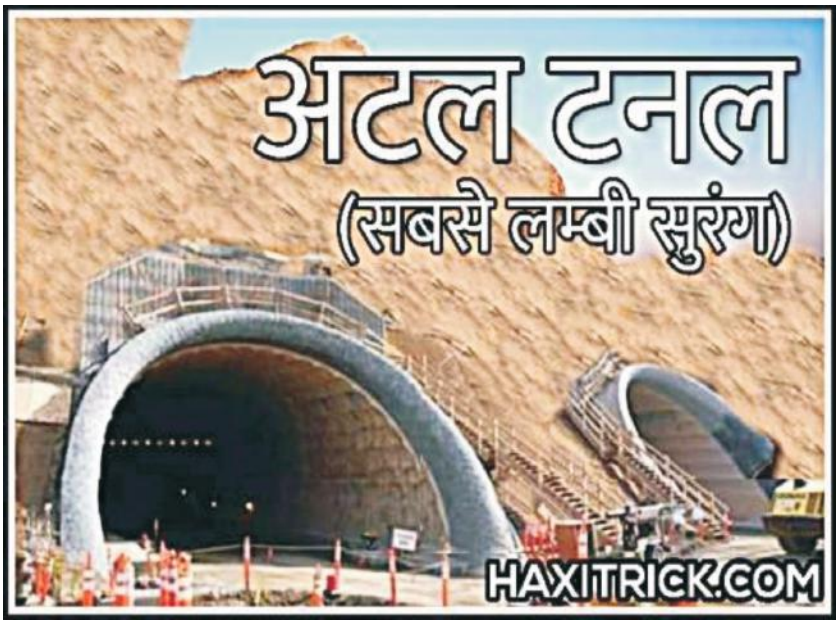

पहुंचने के लिए मुख्य सुरंग में कई रास्ते बनाए गए हैं।

सुरंग का लाइट सिस्टम इस तरह से है कि वाहन के एक निश्चित दूरी पर आते ही लाइट स्वत: जलती चलेंगी और गुजरते ही बंद हो जाएंगी। सुरंग से बाहर निकलते ही नॉर्थ पोर्टल में बौद्ध शैली के स्वागत द्वार के बाद चंद्रा नदी पर बने पुल को पार करते ही सड़क पुराने मनाली-लेह मार्ग से जुड़ जाएगी। एक घंटे के सफर के बाद यात्री केलंग, जबकि करीब नौ से 10 घंटे में लेह पहुंच जाएंगे। इससे मनाली और लेह के बीच करीब 46 किलोमीटर की दूरी कम हो जाएगी। लाहुल घाटी बर्फबारी के कारण छह महीने शेष दुनिया से कटी रहती है। सुरंग बनने से घाटी का संपर्क देश से नहीं टूटेगा। अब वहां बिजली भी गुल नहीं होगी क्योंकि बिजली की लाइन भी सुरंग के अंदर से ही जा रही है। सुरंग सर्दियों में भी खुली रहेगी, लेकिन इसे मनाली और केलंग से जोड़ने वाली सड़क को हिमस्खलन द्धएवलांचऋ से बचाना बाकी है। इसके लिए स्नो एंड एवलांच स्टडी एस्टेब्लिशमेंट द्वारा डिजाइन किए एवलांच प्रोटेक्शन स्ट्रक्चर तैयार किए जा रहे हैं। रोहतांग दर्रे के नीचे रणनीतिक महत्व की इस सुरंग को बनाए जाने का निर्णय 03 जून 2000 को अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने लिया था। उन्होंने 2003 में इसका शिलान्यास किया था। हरियाली से शीत मरुस्थल तक इस सुरंग के दोनों प्रवेश द्वार देश के सबसे खूबसूरत इलाके धुंदी और लाहुल में खुलते हैं। मनाली के हरे- भरे इलाके से प्रवेश के बाद यात्री शीत मरुस्थल लाहुल में बिलकुल अलग नजारों वाले पहाड़ों के मध्य बाहर निकलेंगे।

अटल रोहतांग टनल परियोजना के बीआरओ के चीफ इंजीनियर केपी पुरसोथमन ने बताया कि अटल रोहतांग सुरंग अटल टनल का निर्माण पूर्णता की ओर है। अत्याधुनिक तकनीक से युक्त यह सुरंग हर तरह से बेजोड़ है। ◆◆◆

स्वस्थ खाद्य पदार्थों की चुनौती विकल्प प्राकृतिक खेती

विश्व भर में खाद्य सुरक्षा एक चिंता का विषय बनता जा रहा है। सभी देश अपने यहां खेती के तरीकों में निरंतर बदलाव कर रहे हैं ताकि स्वस्थ और पोषणयुक्त भोज्य पदार्थों की उपलब्धता आम जनमानस को सुनिश्चित की जा सके। खाद्य सुरक्षा को लेकर सबसे बड़ी बाध पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाते हुए किसान आय को बढ़ाना भी है। जिसे लेकर विश्वभर के देश नित नए अनुसंधन कर रहे हैं और एक बेहतर, कम खर्चीली और आय बढ़ाने वाली खेती पद्धति की तलाश कर रहे हैं। इन्हीं चीजों को ध्यान में रखते हुए हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के अंतर्गत सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती की शुरूआत की है।

इस खेती की विधि को हिमाचल में शुरू करने का मुख्य कारण इसका आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव ना होना, खेती लागत में कमी और अंतर्वर्तीय फसलों की बिजाई से किसान को अतिरिक्त आय सुनिश्चित करना बाजार में स्वस्थ भोज्य पदार्थों की उपलब्धता को कायम करना है। खेती की यह विधि न केवल किसानी की लागत को कम करती है बल्कि किसान की आय को बढ़ाती भी है। इसके साथ ही यह विधि यह भी सुनिश्चित करती है कि स्वस्थ खाद्यान्न से वर्षभर किसान और उसके परिवार की पोषण जरूरतें भी पूरी की जा सकें। यह विधि उपभोक्ताओं के लिए भी हितकारी है, जहां उपभोक्ता को शुद्ध और पोषण युक्त भोजन की उपलब्धता होती है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना का उद्देश्य प्रदेश के लोगों के लिए ना केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना है बल्कि उन्हें पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित करना है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हिमाचल प्रदेश में लगभग 50 प्रतिशत महिलाएं रक्तता और पोषण की कमी से जूझ रही हैं वहीं 6 जिलों में 50 प्रतिशत बच्चे कैल्शियम और आयरन की कमी से ग्रसित हैं। इन महिलाओं और बच्चों के लिए स्वस्थ एवं पोषणयुक्त खाद्य पदार्थों की आवश्यकता है।

पिछले दो वर्षों से प्रदेश में प्राकृतिक खेती की जा रही है। अभी तक 74 हजार किसानों ने 3600 हैक्टेयर कृषि भूमि पर इस खेती विधि के तहत खेती शुरू कर दिया है। प्रदेश की 3,226 पंचायतों में से 2,950 पंचायतों को 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के दायरे में लाया जा चुका है। इस विधि में किसान की खेती लागत न्यूनतम है और 75 प्रतिशत प्रशिक्षित किसान इस पद्धति से खेती करना शुरू कर चुके हैं। शुरूआती तौर पर मिल रहे नतीजों के अनुसार इस विधि से खेती लागत में 45 प्रतिशत की कमी देखी गई है। जैसै-जैसे किसान इस विधि को पूरी तरह करना शुरू

करेंगे इन आंकड़ों में स्वत: ही बदलाव आएगा। भारत सरकार की नीति निर्धरण संस्था नीति आयोग ने भी प्राकृतिक खेती विधि को किसान आय दोगुनी करने का उत्तम विकल्प माना है।

सरकार और किसान दोनों इस खेती के लिए कितने गंभीर हैं इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि लॉकडाउन के दौरान भी इस विधि के तहत खेती गतिविधियां अनरवत चल रहीं। किसानों और कृषि अधिकारियों के बीच लगातार संपर्क बनाए रखने के लिए 108 वाट्सऐप ग्रुप बनाए गए। इन ग्रुपों के माध्यम से प्रदेशभर के 8 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में जरूरी दिशा-निर्देश दिए गए और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान भी किया गया। इसके साथ ही 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत ब्लॉक स्तर पर काम कर रहे बीटीएम और एटीएम अधिकारियों ने भी अपने स्तर पर किसानों के साथ संपर्क बनाए रखा और समय-समय पर उनको जरूरी दिशा-निर्देश दिए।

खेती में अक्सर महिला किसानों के योगदान को नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अधीन महिलाओं के योगदान को भी तरजीह दी जा रही है। इस योजना के अंतर्गत किचन-गार्डनिंग की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया जा रहा है। इसके लिए किचन-गार्डनिंग का मॉडल भी विकसित किया गया है जिसमें कम से कम 20 फसलें प्राकृतिक विधि से लगायी जाएंगी ताकि संतुलित आहार की उपलब्धता को घर में ही सुनिश्चित किया जा सके। प्राकृतिक खेती विधि से किचन-गार्डनिंग के लिए प्रदेशभर में 160 महिला समूहों के माध्यम से 1,600 महिलाओं को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

हिमाचल प्रदेश जहर मुक्त प्राकृतिक खेती के पथ पर लगातार आगे बढ़ रहा है और देश के अन्य राज्य भी हिमाचल से प्रेरणा ले रहे हैं। हिमाचल प्रदेश सरकार 2022 तक प्रदेश को प्राकृतिक खेती राज्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित कर द्रुत गति से कार्य कर रही है। प्रदेशभर में इस विधि से खेती कर रहे किसानों के अनुभव बेहद सकारात्मक रहे हैं और किसान इस विधि से मिल रहे परिणामों से खुश होकर स्वयं ही अन्य किसानों को इस पर्यावरण हितैषी खेती से जोड़ रहे हैं। प्रदेश भर में प्राकृतिक खेती से अन्न, सब्जियों एवं फलों का उत्पादन किया जा रहा है। फलों की टोकरी कहे जाने वाले हिमाचल प्रदेश में सेब बागवानी और अन्य फलों के उत्पादन में प्राकृतिक खेती विधि का प्रयोग किया जा रहा है। अभी तक इस खेती विधि के तहत 6800 से अधिक बागवान सेब एवं अन्य फलों में इस खेती विधि के तहत सफलतापूर्वक बागवानी कर रहे हैं। ◆◆◆ **रोहित पराशर, लोक संपर्क अधिकारी, प्राकृतिक खेती खुशहाल खेती योजना।**

गौवंश के पालन पोषण के लिए सरकार करेगी आर्थिक मदद

प्रदेश में अब कोई भी गोवंश सडकों पर बेसहारा नहीं घूमेगा। प्रदेश सरकार ने सडकों पर घुमने वाले इन सभी बेसाहारा पशुओं को प्रदेश भर में गौशाला के अलावा सरकार की ओर से हर जिले में संचालित अभयारण्य क्षेत्र रखा जाएगा। यहां पर सरकार की ओर से 500 रुपए प्रति गाय के हिसाब से खर्चा दिया जाएगा। जिससे इन पशुओं को पालन पोषण की चिंता अब नहीं रहेगी।

प्रदेश भर में तीस हजार गौवंश है। जिसमें 14 हजार गौवंश गौशाला व अभ्यारण्य क्षेत्र में पल रहे है। जबकि 16 हजार गौ वंश सडकों पर बेसाहारा घूम रहा है। इन पशुओं को अब विभाग गौशाला व अभ्यारण्य क्षेत्र में रखा जाएगा। हिमाचल में 192 गौशालाएं हैं। प्रदेश में सिरमौर के कोटला बड़ोग का वन्य अ यारण क्षेत्र को चालू कर दिया है। सोलन के हांडा कुंडी, ऊना के थानाकलां व हमीरपुर की खैरी वन्य अभ्यारण्य क्षेत्र को तीन माह के भीतर चालू कर दिया जाएगा। कांगड़ा के लोथान, खबल, कगेण तथा कुठन में वन्य क्षेत्र के लिए जमीन विभाग के नाम हो गई है जहां पर जल्द ही कार्य चालू कर दिया जाएगा। मंडी व बिलासपुर जमीन का मामला एसीए के पास विचाराधीन है। जैसे ही जमीन विभाग के नाम होती है तो वहां पर काम शुरू कर दिया जाएगा।

गौ सेवा आयोग के उपाध्यक्ष अशोक शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर सोमवार को गौवंश के लिए उपयोगी इस योजना का शुभारंभ करेंगे। उन्होंने कहा कि अब कोई भी गौवंश सडकों पर नहीं दिखेगा। उन्होंने लोगों से अधिक से अधिक सहयोग की अपील की। भाजपा नेता प्रेम गौत्तम ने कहा कि सनातन धर्म में जब की गौवंश के उत्थान की बात होगी तो जयराम ठाकुर का नाम अवश्य लिया जाएगा। उन्होंने सरकार बनाते ही गौ संवर्धन बोर्ड का गठन कर अशोक शर्मा जैसे गौ सेवक को इसका उपाध्यक्ष बनाया। अभी तक जो गौवंश सडकों पर घूमता था उसे लोग आवार पशु का नाम से नहीं जानेगे। अब गौ माता को लोग आदर की दृष्टि से देखेंगे।

◆◆◆

हरे कृष्णा गौशाला में अब और गौवंश रखे जाएंगे

सरकार की ओर से वित्तीय सहयता मिलने का बाद बददी के मलकू माजरा स्थित हेर कृष्णा गौशाला में अब 400 पशु बढ़ाकर एक हजार कर दिया जाएगा। बीबीएन में अब कोई भी गौवंश सडकों पर घूमता नजर नहीं आएगा। अक्तूबर से पहले पहले सभी पशुओं को गौशाला व वन्य अभ्यारण्य क्षेत्रें में पहुंचा दिया जाएगा। इस वर्ष कोरोना महामारी के चलते गौशाला में भंडारा व भजन कीर्तन का आयोजन नहीं होगा। केवल कमेटी के कुछ सदस्य सोशल डिस्टेंस का पालन करते हुए हवन का आयोजन करेगे। यह जानकारी गौशाला के संयोजक अशोक शर्मा ने दी।◆◆◆

प्रदेश में कैलिफोर्निया वैरायटी के प्लम से बढ़ी बागवानों की आय

हिमाचल में कैलिफोर्निया वैरायटी के प्लम धूम मचा रहे हैं। बागवानों को इन वैराइटी के पलम के दाम भी चोखे मिल रहे हैं। ब्लैक अंबर, फ्रायर और एंजलीना प्लम की पैदावार कर प्रदेश के बागवान अच्छी-खासी कमाई कर रहे हैं। तीनों किस्मों के प्लम तीन हफ्ते तक खराब नहीं होते हैं। बाजार में 180 रूपये किलो तक बिक रहे हैं। पुरानी सैंटारोजा और फ्रंटियर किस्मों के प्लम की सिर्फ 5 दिन मियाद रहती है। इन किस्मों के बाजार में बागवानों को 50 से 60 रूपये किलो दाम ही मिलते थे। नई किस्मों के प्लम से बागवानों की आगदनी भी अधिक होने लगी है। यह जल्दी खराब नहीं होते। इस कारण बागवानों को इन्हें बेचने का समय भी मिल जाता है। बागवानी विभाग ने वर्ष 2007 में कैलिफोर्निया से प्लम की किस्में आयात की थीं। इसके बाद अब बागवान ब्लैक अंबर, फ्रायर और ऐंजलीना प्लम की किस्मों के पौधों की मांग कर रहे हैं। प्लम के पौधे डेढ़ सौ रूपये में मिल रहे हैं।◆◆◆

हैंडलूम में संभावनाएं एवं रोजगार के अवसर

... प्रत्यूष शर्मा

आजकल उपभोक्ता वैसे तो पॉवरलूम की तरफ ज्यादा आकर्षित हैं, परंतु हथकरघा या हैंडलूम का आज भी विशेष स्थान है।

हथकरघा क्षेत्र ग्रामीण भारत में कृषि के बाद सबसे बड़ा रोजगार देने वाला क्षेत्र है। यह विभिन्न समुदायों के लगभग 43 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। हथकरघा उद्योग देश के कुल कपड़ा उत्पादन में लगभग 15प्रतिशत का योगदान कर भारत की निर्यात आय में भी सहायता करता है।

हथकरघा उत्पाद जहां बड़ी संख्या में ग्रामीण आबादी को रोजगार मुहै॥ कराते हैं वहीं यह पर्यावरण के अनुकूल भी है। हर वर्ष 7 अगस्त को हथकरघा दिवस मनाया जाता है।

हथकरघा दिवस मनाने के लिए 7 अगस्त का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि इस दिन का भारत के इतिहास में विशेष महत्व है। घरेलू उत्पादों और उत्पादन इकाइयों को नया जीवन प्रदान करने के लिए और ब्रिटिश सरकार द्वारा किये जा रहे बंगाल विभाजन का विरोध करने के लिये वर्ष 1905 में 7 अगस्त को कलकत्ता टाऊन हॉल में स्वदेशी आंदोलन आरंभ किया गया था। स्वदेशी आंदोलन की याद में ही 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाने का निर्णय लिया गया।

हिमाचल प्रदेश राज्य हस्तशिल्प एवं हथकरघा निगम लिमिटेड राज्य के गरीब बुनकरों और कारीगरों के हितों की सहायता और प्रचार के उद्देश्य से काम कर रहा है। कहा जाता है कि कुरुक्षेत्र की लड़ाई को दर्शाने वाला चंबा रूमाल जिसे चंबा के राजा गोपाल सिंह ने एक अंग्रेज को 19वीं शताब्दी में उपहार स्वरूप दिया था, अब उसे विक्टोरिया तथा एल्बर्ड म्यूजियम लंदन में रखा गया है। यह भी कहा जाता है कि 20वीं शताब्दी के आरंभ में राजा भूरि सिंह ने ऐसे कढ़ाई किए हुए कपड़े मंगवाए और उन्हें 1907 तथा 1911 में लगे दरबारों में दिल्ली भेजा। वहां शायद इन रूमालों को पहली बार इतना सराहा गया कि इनका नाम ही चंबा रूमाल पड़ गया। 31 अक्तूबर 2008 को यूनेस्को ने चंबा रूमाल को विश्व धरोहर घोषित किया था। हिमाचल हस्तशिल्प की बात करें तो कुल्लू शॉल का नाम पहले नंबर पर आता है। प्रदेश के हैंडलूम प्रोडक्ट कुल्लू की शॉल, किन्नौर की शॉल और चंबा के रूमाल की जीआई टैंगिग की गई है।

हरियाणा के सूरजकुंड में फरवरी 2020 में हुए अंतरराष्ट्रीय हस्तशिल्प मेले में 23 वर्ष बाद हिमाचल प्रदेश को थीम स्टेट बनाने का मौका मिला था। यह हमारे लिए बहुत गौरव की बात रही कि इस सूरजकुंड मेले के माध्यम से दूसरे राज्यों के लोग भी रूबरू हो गये। इससे हमारी संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। इस मेले में उज्बेकिस्तान को कंट्री पार्टनर बनाया गया था। हिमाचल सरकार ने हथकरघा उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई हैं। हिमाचल प्रदेश हथकरघा एवं हस्तशिल्प विकास सहकारी संघ समिति 'हिमबुनकर' के नाम से जानी जाती है। देश व प्रदेश में जगह-जगह पर हिमबुनकर के कई शोरूम खोले गए हैं। गत वर्ष प्रसिद्ध ऑनलाइन शॉपिंग बेबसाइट अमेजॉन ने हिमबुनकर के साथ करार किया था। एक एमओयू साइन किया गया ताकि हिमबुनकर के उत्पाद अमेजॉन बेबसाइट पर बेचे जा सकें। यह हमारे प्रदेश की संस्कृति को देश-विदेश तक पहुंचाने में एक अहम कदम है। भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय ने हथकरघा के उन्हीं उत्पादों को शामिल किया है, जो सरकार के तय मापदंडों पर खरे पाए जाते हैं।

हिमबुनकर संघ देश में लगभग साढ़े तीन करोड़ रुपए के स्वयं तैयार उत्पाद बिक्री करता है। वस्त्र मंत्रालय की ओर से गत वर्ष में लगभग दो करोड़ छह लाख रुपए की हथकरघा प्रशिक्षण संबंधी कलस्टर परियोजनाएं कुल्लू व मंडी जिलों के लिए स्वीकृत की गई थीं। अभी हाल ही में केंद्र सरकार ने कुल्लू जिला के धरोहर गांव नग्गर के समीप शरण गांव को देश के उन 10 गांवों में शामिल किया, जिन्हें हथकरघा गांव के रूप में चुना गया है। इससे हिमाचल में हथकरघा को बढ़ावा मिलेगा और पर्यटन को पंख लगेंगे।

हिमाचल सरकार एक और सराहनीय प्रयास कर रही है जिसमें पारंपरिक कलाओं और हस्तशिल्प को पुनर्जीवित करने के लिए मुख्यमंत्री ग्राम कौशल योजना शुरू की गई है। ग्रामीण युवाओं का कौशल विकास करने के साथ-साथ उन्हें स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना है। इस योजना के कार्यान्वयन को और अधिक सुदृढ़ बनाया जाए ताकि अधिक से अधिक ग्रामीणों को रोजगार मिल सके और हमारा हिमाचल प्रदेश विकास के हर क्षेत्र में बुलंदियों को छू सके।

आत्मनिर्भर हिमाचल की नींव में हैंडलूम एक शशक्त ईंट साबित हो सकती है जरुरत सही दिशा में प्रयत्न करने की है। प्रदेश के प्रत्येक निवासी को अपने प्रदेश हिमाचल की संस्कृति को विश्व के हर कोने तक पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए और हिमाचली हस्तशिल्प और हथकरघा उद्योग को और अधिक बेहतर बनाने में अपना योगदान देना चाहिए।◆◆◆

कोरोना काल

भारतीय मसालों की मांग बढ़ी हल्दी बिक्री में 40 फीसदी वृद्धि

कोरोना काल और बारिश के दौरान लोगों ने अपने शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने के उपायों पर खूब अमल किया है। इस दौरान लोगों ने मसालों और भारतीय परंपरागत खाद्य पदार्थों का इस्तेमाल बढ़ाया है। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता तो मजबूत हुई ही है, इससे भारतीय मसालों की भी बिक्री बढ़ गई है। बाजार का सर्वेक्षण करने वाली कम्पनी नीलसन की हाल ही में आई एक रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान माहमारी से लड़ने के लिए निवारक उपाय के रूप में सुरक्षा, स्वास्थ्य और शरीर की प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करने के घरेलु नुस्खों में हल्दी का उपयोग पुराने समय से किया जा रहा है।

इन दिनों कई लोगों ने हल्दी दूध या काढ़े बनाने के लिए हल्दी का इस्तेमाल बढ़ाया है। हल्दी और दूसरे मसालों के साथ-साथ काली मिर्च, अदरक, लहसून, तुलसी, पुदीना आदि को भी एंटीसैप्टिक, जीवाणुरोधी गुणों के लिए पहचाना जाता है। यह पदार्थ मानसून के दौरान बीमारियों को दूर रखने में मदद करते हैं इसलिए मानसून के दौरान प्रतिरक्षा को बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों का इस्तेमाल बढ़ाने की प्रवृति के बारे में टाटा संपन्न की न्यूट्रिशन एक्सपर्ट कविता देवगण का कहना है कि भारतीय तरीके के पोषक आहार में पौष्टिक शक्ति से भरपूर खाद्य पदार्थों को शामिल किया जाता है। इससे न केवल प्रतिरक्षा में सुधार होने में मदद होती है बल्कि सर्वगुण संपन्न स्वास्थ्य भी पाया जा सकता है। घर में पकाया जाने वाला सादा भोजन स्वास्थ्य की सुरक्षा में सबसे आगे रहता है, साथ ही शरीर के व्यापक कल्याण और पोषण में सहायक होता है। उनकी मांग भी काफी बढ़ चुकी है। जिन भारतीय मसालों की मांग इस समय बढ़ रही है, उनमें हल्दी की मांग में खास तेजी देखी गई है। पिछले कुछ महीनों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर इसकी मांग में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। नीलसन रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि अगले 6 महीनों तक अधिकांश ग्राहक सुरक्षा और प्रतिरक्षा बढ़ाने की आदतों को जारी रखेंगे।

सही खाद्य चुनना भी महत्वपूर्ण

देवगण का कहना है कि सही खाद्य पदार्थ चुनना भी महत्वपूर्ण है ताकि मानसून के साथ आने वाली बीमारियों को दूर रखा जा सकें। उदाहरण के तौर पर अच्छी हल्दी, जो सेलम से लाई जाती है, प्राकृतिक तेल बचाकर रखा जाता है। शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत रखने के लिए आवश्यक करक्यूमिन इस हल्दी में 3 प्रतिशत होता है। यह हल्दी सर्वगुण संपन्न स्वास्थ्य प्रदान करती है। इसी तरह से जिनसे पोषक तत्वों को निकाला गया है, ऐसी प्रोसैस्ड दालों का इस्तेमाल करने के बजाय अनपॉलिश्ड दालों का उपयोग कीजिए। ऐसा इसलिए क्योंकि ये प्रोटीन से भरपूर होती हैं। पोषण विशेषज्ञ कहते हैं कि सही सेहत के लिए हर दिन 2 बार दालों को जरूर खाना चाहिए।◆◆◆

चीन की विस्तारवादी नीति से रूस भी रूष्ट

दुनिया के 2 सुपर पॉवर देश रूस और चीन न केवल वर्षों से एक-दूसरे के मित्र हैं बल्कि दोनों इसका खुलकर इजहार भी करते हैं। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग अब तक करीब 30 बार मिल चुके हैं। इस सबके बाद भी अब रूस-चीन दोस्ती में बड़ी दरार पड़ती दिख रही है। इसका सबसे बड़ा कारण बना है चीन की दादागिरी और उसका विस्तारवादी रवैया, जिसके चलते रूस अमरीका के साथ आ रहा है। रूस और चीन के बीच गतिरोध के 3 प्रमुख कारण हैं-रूस के सुदूरवर्ती शहर व्लादिवोस्तोक पर चीन का दावा, रूस की ओर से भारत को हथियारों की डिलीवरी और चीन को एस-400 मिसाइलों की डिलीवरी में देरी।

भारतीय मीडिया में ऐसी खबरें आई हैं कि भारत सरकार ने रूस को इंडो-पैसिफिक रिजन में अमरीका के नेतृत्व वाले ग्रुप में शामिल होने का सुझाव दिया है। भारत ने कथित रूप से रूस से कहा है कि वह मास्को के ग्रेटर यूरेसिया प्रोजैक्ट का समर्थन करता है। इस सुझाव पर चीन के विश्लेषक भड़क उठे हैं। वे इसे चीन के साथ धोखा करार दे रहे हैं। कुछ तो यह भी कह रहे हैं कि रूस को नाटो में ही शामिल हो जाना चाहिए जिसे उसे रूस को रोकने के लिए बनाया गया था।◆◆◆

भारत आर्थिक सफलता का साक्षी है: अमेरिकी सांसद

अमेरिका के एक शीर्ष सांसद ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सकल घरेलू उत्पाद मामले में भारत ने ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ दिया है। इससे पता चलता है कि भारत आर्थिक स्वतंत्रता की सफलता का साक्षी है। सांसद जो विल्सन ने भारत को 74वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर बधाई देते हुए प्रतिनिधि सभा में यह बात कही। शीर्ष अमेरिकी सांसद ने कहा, पिछले साल भारत ने सकल घरेलू उत्पाद मामले में ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ दिया, लेकिन वुहान से शुरू कोरोना वायरस ने इन आर्थिक उपलब्धियों को बाधित कर दिया। विल्सन ने कहा, गरीबी में कमी लाते हुए समाजवाद से लेकर मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था तक भारत का विकास आर्थिक स्वतंत्रता की सफलता का साक्षी है। अमेरिका के थिंक टैंक 'वर्ल्ड पॉपुलेशन' की फरवरी की समीक्षा के मुताबिक भारत 2019 में ब्रिटेन और फ्रांस को पछाड़कर विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है।

पाकिस्तान ने पहली बार माना कराची में ही है भारत का मोस्टवांटेड दाउद इब्राहिम

पाकिस्तान नें आतंकी फंडिंग को लेकर वितीय कार्रवाई कार्यबल एफएटीएफ में सख्ती से बचने की कोशिश में पहली बार मान लिया कि भारत का मोस्टवांटेड डॉन दाउद इब्राहिम कराची में ही है। इमरान खान सरकार ने 88 प्रतिबंधित संगठनों और उनके सरगनाओं पर वितीय प्रतिबंध लगाए हैं। इस सूची में हाफिज सईद, मसूद अजहर के साथ ही दाउद का भी नाम है। दरअसल, पाकिस्तान सरकार ने बीते 18 अगस्त को दो अधिसूचना जारी की, जिसमें 26/11 मुंबई हमले के साजिशकर्ता और जमात-उद-दावा के सरगना सईद, जैश-ए-मोहम्मद के प्रमुख अजहर और दाउद पर प्रतिबंधों की घोषणा की थी।

सरकार ने इन संगठनों और आकाओं की चल-अचल संपतियों को जब्त करने, उनके बैंक खातों को सीज करने तथा विदेश यात्रा पर रोक के आदेश दिए हैं। सूची के मुताबिक, दाउद का जन्म 26 दिसंबर 1955 को हुआ। कराची में उसके तीन आलीशान ठिकाने है। ये हैं व्हाइट हाउस, सउदी मस्जिद के करीब, क्लिफटन। दूसरा-हाउस नंबर-37, 30वीं स्ट्रीट, डिफेंस हाउसिंग प्राधिकरण, कराची। तीसरा-पैलेशियल बंगला, नूरबाद पहाड़ी, कराची। महाराष्ट्र के रत्नागिरी में जन्मा दाउद कराची से ही आतंकी वारदात कराता है।◆◆◆

राममंदिर निर्माण की आधारशिला से राष्ट्र की आस्था को मिला नया आयाम

... वरूण कुमार

भारतवर्ष, संत महात्माओं, ऋषि-मुनियों, सिद्धों की धरती, जिसका अस्तित्व न जाने कब से इस धरा पर माना जाता रहा है। न जाने कितने राजा महाराजा, बादशाह, सुल्तान इस भूमि पर अधिकार की लालसा लिए अपना कौशल दिखाते रहे। बहुत से राजवंश, सल्तनत के सिपहसालार, जहां तक कि पश्चिमी देशों से अंग्रेज भी भारत की स्वर्णिम इतिहास को संजोए धरा पर अपना अधिकार जमाने आए, कुछ हद तक सफल भी हुए, भारत के गौरव को नष्ट करने की चेष्टा भी की, किंतु वापिस लौट गए। यह हम भारतीयों, हिंद के वंशजों की पावन धरती है, जिस पर सदियों से हम रहते आए हैं और यह हमारी मातृभूमि है। यह सत्य और धर्म की मूर्ति प्रभु राम की भूमि है, जिन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में जाना जाता है। सुदर्शन चक्र धरण करने वाले और मधुर बांसुरी की धुन से मन को आह्लादित कर देने वाले भगवान श्री कृष्ण की भूमि है। सीमाओं पर शहादत देकर देश की अस्मिता को सुरक्षित रखने वाले उन वीर सेनानियों की गौरव-स्थली है, जिनके लिए धर्म, जाति, संप्रदाय कोई महत्व नहीं रखते। इसी भारतवर्ष की भूमि पर त्रेता युग में अवतार लेकर अवतरित हुए भगवान श्री राम की पावन धरती अयोध्या नगरी में भव्य राम मंदिर के निर्माण की आधरशिला रखते ही उस नवयुग के प्रारब्ध का शंखनाद होना निश्चित हुआ है, जिसकी प्रतीक्षा हर भारतवासी न जाने कितने ही वर्षों से करता आ रहा है।

जहां राम का जन्म हुआ था, मंदिर वहीं बनाएंगे

भारतीय राजनीति के पितामह और राम मंदिर निर्माण के मुख्य पक्षधर, लाल कृष्ण आडवाणी के इन शब्दों को नई ऊर्जा मिली, जब देश के प्रधान सेवक, नरेंद्र मोदी के द्वारा संघ प्रमुख मोहन भागवत जी और परम सिद्ध महात्माओं की उपस्थिति में राम मंदिर निर्माण की पहली ईंट रखी गई। यह न केवल हिंदुत्व अपितु सारे भारतवंशी जनों की आस्था की विजय है, जिसमें धर्म और संप्रदाय से Åपर उठकर माननीय उच्चतम न्यायालय ने मंदिर और मस्जिद दोनों स्थानों के लिए भूमि का आवंटन करने हेतु एक अद्भुत निर्णय सुनाया। श्सत्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होतीश। राम लला के जन्मस्थान के साक्ष्य प्रमाणित होने पर उसी भू-भाग पर मंदिर निर्माण की घोषणा की गई, जहां प्रभु राम टेंट के अंदर और टाट-पट्टी पर विराजमान थे। पिछले अëाइस वर्षों से चल रही प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हुईं। भगवान राम के पुनः भव्य मंदिर में स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

राम जन्मभूमि पर भगवान हरि विष्णु का अवतार श्री राम के रूप में जन्म लेना, हम सभी भारतीयों, विशेषकर अयोध्या वासियों के लिए गर्व और गौरव का विषय है। संकीर्ण मानसिकता से ग्रसित कुछ लोग कहते हैं कि यह हिंदुत्व की कल्पना है, या हिंदुत्व की विचारधरा का परिणाम है, किंतु इसके पीछे जो सत्य छिपा है, उस पर कोई ध्यान देना नहीं चाहता। हिंदुत्व एक विचारधरा अवश्य है, किंतु यदि गहनता से जानने का प्रयत्न करें तो यह कोई संकीर्ण मानसिकता नहीं, बल्कि एक सकारात्मक सोच है। वैचारिक मतभेद अवश्य हो सकते हैं, किंतु ये मनभेद नहीं कहे जा सकते। मन से सभी भारतीय एकता के सूत्र में बंधे हैं। हमारी समृद्ध परंपरा, गौरवशाली इतिहास को हम सभी एक मान कर चलते हैं। कहा भी जाता है, 'एक पवन, एक ही पानी, एक ज्योति संसारा।।। एक ही खाट, ।।। एक ही सृजनहारा।।।' तो स्पष्ट शब्दों में इसका यही अर्थ है कि ईश्वर एक है, और दीन-मजहब के आधार पर हम एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते। राम सभी के हैं, और सभी के âदय में समाए हैं। इसलिए यह कहना कि हिंदुत्व स्र्फि हिन्दू को ही केंद्र में रखकर चलता है, इसका कोई मोल या तर्क नहीं। यह विचारधारा सभी धर्मों का सम्मान करती है, और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर चलने वाली, बढ़ने वाली एक शुद्ध विचारधारा है, जिसकी पुष्टि भारत के महान दार्शनिक और अध्यापक, देश के राष्ट्रपति रहे डॉ। सर्वपल्ली राधकृष्णन भी कर चुके हैं। अतः राम मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होना, सभी भारतवासियों के लिए गर्व और सम्मान का सूचक है। यह हमारे समृद्धशाली इतिहास, परंपरा, राष्ट्र के वैभव और आस्था की विजय का परिचायक है। प्रभु श्री राम एक और वनवास खत्म कर अपने धम लौट रहे हैं, इससे बढ़कर खुशी क्या हो सकती है। माननीय उच्चतम न्यायालय के द्वारा एक पक्ष की आस्था का आदर किया गया है, तो दूसरे पक्ष को भी उनका अधिकार दिया गया है। किसी भी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं किया गया, जोकि भरतवंश की उदारता को दर्शाता है।

रामजन्मभूमि में भव्य राम मंदिर की झलक देखने और राम लला के दर्शनों को उमड़ने को लेकर हर âदय लालायित है। हर कोई इस चाह में डूबा है कि शीघ्र अति शीघ्र सरयू के जल में स्नान कर, भगवान के श्री चरणों में वंदन कर सके। वर्तमान स्थिति एवं परिदृश्य के कारण देश भर से जनसैलाब अयोध्या में नहीं उमड़ा, किंत मन से सभी अयोध्या नगरी में ही उपस्थित थे। राष्ट्र के प्रधान सेवक ने समूचे राष्ट्र की ओर से राम मंदिर की आधरशिला रखते हुए हर देशवासी को धन्य किया। एक बार पुनः रामराज्य अयोध्या में लौट आया है। भारत वर्ष ने जिसकी कल्पना की थी, वह इच्छा पूर्ण हुई है।

राष्ट्रधर्म सर्वोपरि के भाव की विजय हुई है।

धर्म, जाति, संप्रदाय भुला दें, करें संग भव सागर पार।

प्रभु राम पधरे पुनः अयोध्या, आओ करें मिलकर सत्कार।।

स्थिति विषम चाहे कितनी भी, नाम राम का ध्यायेंगे।

दर्शन के अभिलाषी तेरे, राम लला हम आयेंगे।। ◆◆◆

सेवा में तत्पर भारतीय नारी

... रश्मि दाधीच

बेतरतीब पड़े, एक छोटे से कमरे में टी.बी. जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहा 11 बरस का बालक सोनू, अपनी 6 वर्षीय बहन खुशबू के साथ कहीं से मांगकर लाई दाल को आज भी पानी से छौंकने की तैयारी कर रहा था। तभी रीना दीदी किशोरी विकास केंद्र की लड़कियों के साथ राशन किट लेकर उसके पास पहुंची, तो सोनू की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। ये तो सिर्फ शुरुआत थी, आगरा की बस्ती में रहने वाले इन अनाथ भाई बहनों की देखरेख के साथ ही, पढ़ाई व दवाई की व्यवस्था भी अब आगरा सेवाभारती मातृमंडल की बहनें कर रही हैं।

यूं तो मांगीलाल एक वृद्ध भिखारी रोज 10 रू में सोलापुर में उद्योगवर्धिनी की रसोई से एक थाली लेकर जाते थे पर लॉकडाउन में जब वे 2थालियां लेकर जाने लगे, तो चन्द्रिका ताई ने देखा कि वो भीख से मिले पैसों से दूसरे भिखारियों को भी खिला रहे हैं। यह देख एक मां का दिल भर आया, राष्ट्रीय सेवा भारती के ट्रस्टी बोर्ड की सह सचिव चंद्रिका चौहान ने आसपास के सभी मंदिरों के भिखारियों, बस्तियों के लाचार दिव्यांगो के साथ, घरों में बैठे बुजुर्गों को लॉकडाऊन की अवधि के लिये, नि:शुल्क भोजन पहुंचाना शुरु कर दिया। 26 मार्च से लगातार 4 महीने 250 से अधिक लोगों को नि:शुल्क व सैकड़ों प्रवासी श्रमिकों को मात्र 120 रु में भरपेट भोजन कराया, इन सेवा भावी महिलाओं ने।

हिमाचल प्रदेश में प्रकृति को पूजने वाले लोग उसके संरक्षण के लिए भी हमेशा आगे रहते हैं। प्रदेश में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और संरक्षण की ष्टि से महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। यहां पर महिलाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण और संतुलन को बनाए रखने के लिए अनेक अनुकरणीय कार्य किये जा रहे हैं। मंडी के करसोग क्षेत्र में महिलाएं धरती पर हरियाली बचाने के लिए पौधारोपण का अभियान चला रही हैं। महिलाओं ने शिवा महिला मंडल के तत्वाधान में देहरी सहित आसपास के क्षेत्रों में खाली जगह पर पौधारोपण किया। इस दौरान विभिन्न प्रजातियों के कई पौधे रोपे गए। महिला मंडल की सदस्यों ने पर्यावरण को बचाने के लिए पौधों की देखभाल का भी संकल्प लिया। ताकि पौधों के जीवन समय को बढ़ाया जा सके। इतना ही नहीं, महिलाएं अपने क्षेत्र में लोगों को स्वच्छता का पाठ पढ़ा रही हैं। सभी महिलाएं छुट्टी के दिन क्षेत्र में स्वच्छता अभियान भी चलाती हैं। इस दौरान सभी महिलाएं इधर-उधर बिखरे कूड़े को एकत्र कर उसका पर्यावरण के अनुकूल निस्तारण करती है।

कुल्लू जिले के आनी में नवज्योति महिला मंडल घोरना की महिलाओं ने पौधारोपण के कार्य को गति देने के सात ही पौधों के संरक्षण का संकल्प भी लिया। महिलाओं ने अभियान की शुरूआत गांव के मंदिर प्रांगण को स्वच्छ करके की। इसके बाद ग्राम्य स्तर पर स्वच्छता का काम किया गया। कोरोना महामारी की गंभीरता के प्रति अपने दायित्वों के निर्वहन के लिए महिलाओं ने लोगों को अपने स्तर पर जागरूक किया। पर्यावरण संरक्षण के बारे में लोगों को बताया, गरीब और जरूरतमंद लोगों को मास्क भी बांटे।

वहीं, ऊना में अबादी बराना में भी महिलाओं ने एकत्र होकर पर्यावरण स्वच्छता के बारे में लोगों को प्रेरित किया। शिमला जिले के ठियोग क्षेत्र की महिलाओं ने जब देखा कि उनके पानी के प्राकृतिक स्रोत हर साल बारिश के पानी के कारण दूषित हो जाते हैं और बरसात में बीमारियों का खतरा बना हुआ है तो उन्होंने क्षेत्र के गांवों में स्थित सभी बावड़ियों, जलकूपों की सफाई का बीड़ा उठाया। इतना ही नहीं महिलाओं ने वृक्षारोपण अभियान में भाग लिया और वनों की हरितिमा को बचाने में अपना बहुमूल्य योगदान किया। प्रदेश की महिलाएं पूर्व में भी स्थानीय वनस्पतियों का उपयोग करके स्वदेशी राखियां बनाकर अपनी जीवटता दिखा चुकी हैं। इतिहास साक्षी है, जब भी समय ने नारी के धैर्य की परीक्षा ली, नारी ने चुनौतियों से लड़कर नई ऊर्जा को जन्म दिया है। देश पर मंडराते कोरोना संकट में राष्ट्रीय सेवा भारती और मातृमंडल की महिलाओं ने किसी की मां, किसी की बहन, तो किसी की बेटी बनकर, मुश्किल जदा लोगों को सहारा दिया है।

◆◆◆

भारत की गाथा

जीवन शुभ कर्मों का फल है
ये अकलंकित रहने दो
प्रेमसुध रस बांटो जीवन
विषवंचित ही रहने दो ।।
तुलसीदास घिसा था चंदन
रघुवर तिलक लगाने को
क्या नहीं करना पड़ता है
राम के दर्शन पाने को ।।
रामकृपा जब उसने पा ली
श्रीराम चरित रच डाला
तुलसीदास रचित 'मानस'
काव्य अद्भुत और निराला ।।
चित्रकूट के घाट जहां पर
रघुवर आने वाले थे
हनुमत पास विराज रहे
अंजनि मां के लाले थे ।।
पल पल आतुर रहते थे
हनुमत दर्शन पाने को
सेवा उनकी करने को
उनका हुक्म बजाने को ।।
युगों युगों की भक्तिका
ये फल हम को मिलता है
पुष्प लगाया भक्ति का वो
जन्म जन्म तक खिलता है।।
रामकृपा जब पाई तो
फिर देवकृपा आसान हुई
राम की महिमा लिखने की
इच्छा तब बलवान हुई ।।
सप्त काण्ड में 'मानस' महिमा
का श्रीमंत गुणगान किया
वाल्मीकि अवतरित भये जूं
शिव ने अन्तर्ध्यान किया ।।
दोहे और चौपाई सोरठ
अद्भुत छन्द विधन सजा
चुन चुन लाये अक्षर अक्षर
अउधी में ज्ञानविज्ञान सजा।।

शक्ति चंद राणा
मलघोटा, बैजनाथ, हि. प्र.

शिखर पर

हर किसी के बूते में नही
शिखर पर पहुंचना,
हौसलों को बुलंद रखना
जिस्म को पिघलाना
पड़ता है।
दुर्गम रास्तों व उफनते
दरियाओं को
रौंदना पड़ता है,
लांघना पड़ता है।
जिन्हें मंजिल नसीब नही
कितने ही वो मील के पत्थर
हौसला देते हैं आगे बढ़ने का
जो करते हैं नित कोशिश।
शिखर पर
गाड़ देता है अपनी कामयाबी
का झंडा।
देखता है नीचे
टिमटिमाते जुगनू
जमीन पर रेंगते असंख्य इंसान
रूपी जीव ।
इतराता है अपने होने पर
भीड़ से अलग , सबसे जुदा।
लेकिन
भ्रम है उसे
शिखर पर होने के बाबजूद
उसका वजूद भी
उन असंख्य प्राणियों जैसा है
जिनसे वह अपने को
जुदा समझ बैठा है ।
शायद वह भूल गया
शिखर पर पहुंचना मुश्किल है
लेकिन गिरना आसान।

देवराज डडवाल, सरनूह, नूरपुर, कांगड़ा हि.प्र.

आधुनिक भारत

उठो देश के वीर जवानों
मिलकर अब सब
एक नए भारत का
हम आगाज करते।
खो रही है जो
जन-जन की सत्ता
मिलकर उसको फिर
अपने अधिकार में करते।
लूट रहे हैं जो
हर पल देश की इस्मत
फाड़ के सीने उनके
अब उनको सरेआम करते हैं।
उठो देश के वीर जवानों
छोड़कर अब हवस की सत्ता
देश भक्ति के रस में चूर
होकर आधुनिक भारत का
निर्माण करते हैं।

राजीव डोगरा 'विमल',
कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

नारी तेरी यही कहानी

नारी है देवी का रूप,
नारी की कोख से जन्म लेकर
डसकी इज्जत करना जानते क्यों नहीं,
सभी नारियां देवी का स्वरूप हैं,
ये बात जानते हुए भी मानते क्यों नहीं।
जैसे अपनी बहनों की करते इज्जत,
वैसे ही औरों की भी
इज्जत करना जानते क्यों नहीं,
जिस मां के आंचल की छांव में पले बढ़े
किसी नारी का आंचल,
गिराने से पहले अपने जहन में लाते क्यों नहीं।
देवी की कोख से जन्म लेकर,
उसकी कोख में पल रही दूसरी देवी की,
हत्या का सवाल जहन से त्यागते क्यों नहीं,
नसीब से मिलती बेटी,
फिर भी कन्या भ्रूण हत्या जैसे,
हो रहे पाप को रोकना उसके खिलाफ आवाज,
उठाना जानते क्यों नहीं।
नारी देवी का स्वरूप है मानते क्यों नहीं।
सृष्टि सृजन कर्ता वो पालन कर्ता दुखहर्ता,
देवी की सेवा करना जानते क्यों नही।
उसी देवी का अंश तुम, मानते क्यों नहीं।
नारी है देवी का स्वरूप, पहचानते क्यों नहीं।

हर्षिता ठाकुर, नवबहार, शिमला

नस्लभेदी चर्च और दलित उत्पीडन

... अनुज आचार्य

भारत में जो इसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं., बता रहे हैं कि दलितों पर कितने अत्याचार हुए और मानवाधिकार की बात कर रहे हैं, उनसे मैं सिर्फ एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि आज भारत में दलित कि जनसंख्या सबसे अधिक क्यूँ है? जिन गोरे ईसाईयों का हमारे देश के दलितों के समक्ष आदर्श उदहारण प्रस्तुत किया जा रहा है उनसे पूछो कि इसाई मिशनरी ने दुनिया में किया क्या है.... उत्तरी अमरीका में वहां के मूल निवासी Red Indian के साथ इन्होने क्या किया? आज त्मक Indians लुप्तप्राय हो गए हैं! दक्षिण अमरीका में माया सभ्यता फलती फूलती थी वहां आज आज पूर्णतय: लुप्त हो गयी है... इसाई मिशनरी ने वहाँ धर्म के नाम पर कत्ले आम किया! पूरी कि पूरी सभ्यता और मूल निवासियों को मौत के घाट उतार दिया और सब हुआ धर्म के नाम पर....

न्यू जीलैण्ड में भी इन्होने क्यान पश्चिमी संस्थानों में कुछ बड़े ओहदों पर इन दलित पिछड़ी जाति जिन्हें तथाकथित रूप से एमपावर किया जा रहा है, के कुछ भारतीयों को स्थान दिया गया है मगर इसका पूरा ताना-बाना पश्चिमी लोगों द्वारा ही सोचा समझा व नियोजित और फण्ड किया गया था। हालांकि अब और बहुत से भारतीय लोग और NGOs इन ताकतों के सहभागी बनाए गए हैं और इन लोगों को पश्चिम से वित्तीय सहायता और निर्देश मिलते रहते हैं। विवाह के लिए आकर्षित किया और बाद उसकी हत्या कर दी। स्मृति ने गुस्से से प्रश्न किया कि, क्या ये अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है? कौन मुझसे इस मुद्दे पर कोलकाता की सडकों पर बहस करना चाहता है? प्रमोद रंजन ने लिखी 'महिषासुर-पुनर्पाठ की जरूरत नामक पुस्तिका को प्रेम कुमार मणी, अश्विनी पंकज, दिलीप मंडल ने लिखी। जिसे आयवन कोस्का संचालित ऑक्सफोर्ड प्रेस और दिलीप मंडल संचालित नेशनल दस्तक पर प्रचारित किया गया।

वीडियो में Eucharist नामक ईसाई प्रक्रिया हो रही है। ईसाईयों मे 7 मुख्य संस्कारों में इसका स्थान 5वां है। इसे हिन्दी में यीशु का प्रसाद कहा जा सकता है। इसे यीशू का प्रेम का उपहार माना जाता है। यह मैदा और नमक से बनी हुई लगभग 1 इंच की सूखी ब्रेड है। क्योंकि चर्च मे धर्मगुरु को पिता और सभी इसाइयों को उसका बच्चा माना जाता है इसलिए इसे मुंह मे रखने की परंपरा है। यूरोप में चर्च का ादर इसे सामने वाले के मुंह में रखता है। अमेरिका-आस्ट्रेलिया आदि में भी प्राय: मुंह मे रखने की प्रक्रिया है। उत्तरी भारत में यह रस्म बहुत कम है। दक्षिण भारत में भी प्राय: युकरस्ट को मुंह के स्थान हाथ में रखते हैं। मेरी सीमित सूचना के अनुसार भारत में भी जो विदेशी मूल के पादरी हैं वह सार्वजनिक रूप से Eucharist का आयोजन बेहद कम करते हैं ताकि उनके हाथों पर निम्न स्तरीय दलित आदिवासी भारतीयों का थूक ना लग जाए।◆◆◆

प्रकृति का वंदन और संरक्षण

... डॉ. नीरोत्तमा शर्मा

भारतीय मनीषियों ने आविर्भाव काल से ही प्रकृति का महत्व अनुभूत कर लिया था और सामान्य जन में प्रसारित कर जन-जन को प्रकृति का संरक्षक बनाया। ऋग्वेद का नदी सूक्त एवं पृथिवी सूक्त, अथर्ववेद का अरण्यानी सूक्त, जिन में नदियों, पृथ्वी तथा वनस्पति के संरक्षण की बात कही गई है। इसके प्रमाण हैं। वेदों में वन क्षेत्र को 'अरण्य' कहा गया है अर्थात् रण रहित शान्ति क्षेत्र वनस्पति सम्पदा द्वारा धारा के समस्त प्राणियों का भरण-पोषण करने वाले वन का युद्ध की विभीषिका से सुरक्षित रहना आवश्यक था।

संस्कृत भाषा के सम्पूर्ण ज्ञान के अभाव में विदेशी साहित्यकारों ने इनका उपहास करते हुए कहा कि आर्य लोग प्रकृति से डरते थे, इसलिए उसकी पूजा करते थे। अज्ञानतावश व हीन भावना के कारण समाज के एक वर्ग ने न केवल इस विचार को स्वीकार किया, बल्कि इसे प्रोत्साहित भी किया। फलस्वरूप हिन्दू धर्म की जीवन पद्धति, जिसमें कंकर-कंकर में शंकर थे, गंगाजल से पूर्वजों का तर्पण था, बरगद व पीपल की महिमा थीय इन सब को अन्धविश्वास व ढकोसले कह कर खण्डन किया जाने लगा। इसका परिणाम दूषित वायु, मलिन जल व अपवित्र धारा के रूप में प्रकट हुआ। प्रकृति जो चिरकाल से प्राणियों का पालन पोषण करती आई है, प्रदूषण से कराह उठी। जिसका असर बनस्पति व प्राणियों पर लक्षित हुआ। मानव की चेतना तब जा कर जागृत हुई, जब उसे अनेकानेक बीमारियों ने घेर लिया। बात केवल शारीरिक बीमारियों तक ही सीमित न रही। प्रकृति के सामीप्य से दूर होकर मानव जाति अवसाद का शिकार हो गई। अभी भी समय है अपनी जड़ों की ओर लौटने का क्योंकि मानवता को बचाने का यही एकमात्र उपाय है। इस पुनीत कार्य को करने का बीड़ा उठाया है हिन्दू आध्यात्मिक एवं सेवा फाउंडेशन तथा पर्यावरण संरक्षण गतिविधि ने। 30 अगस्त, 2020 रविवार सुबह 10 से 11 बजे समस्त भारतवासियों को अपने घर में पेड़ या गमले में लगे पौधों की पूजा कर प्रकृति वंदन करने का आह्वान किया गया था। प्रकृति वंदन से हम न केवल प्रकृति का आभार प्रकट करेंगे, बल्कि उसकी समीपता भी अनुभव करेंगे। हमारे घरों के बच्चे हमें ऐसा करते देख कर अनेकानेक प्रश्न पूछेंगे, जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि होगी। हमारा एक-एक पेड़ लगाने का संकल्प इस धरा को पुनः हरा भरा कर देगा। वन क्षेत्र बढ़ने से वर्षा की अतिवृष्टि व अनावृष्टि से बचाव होगा।

वन सम्पदा में वृद्धि होने से वन्य प्राणियों का जीवन भी सुलभ होगा। धरा पर धन-धान्य की कमी न होगी, इस धरती पर कोई भी प्राणी भूखा नहीं रहेगा। स्वच्छ जलधारा से सभी के तन मन पवित्र होंगे व समस्त प्राणियों में शुद्ध प्राण वायु का संचार होगा। आईए!! गणेश जी के श्री चरणों में दूर्वा का अर्पण कर हम यह संकल्प लें कि हम जीवन दायिनी 'तुलसी' के आगे दीप जला कर नमन करेंगे। वहीं बरगद को जल चढ़ाएंगे, पीपल के पेड़ के पास दीपक जलाएंगे। केले के वृक्ष की पूजा करेंगे। शिव का श्रृंगार बिल्व पत्रों से करते हुए अपनी सस्कृति को पुनर्जीवित करने का प्रण लेंगे।◆◆◆

कैसे सबसे सुरक्षित शहर बना न्यूयॉर्क

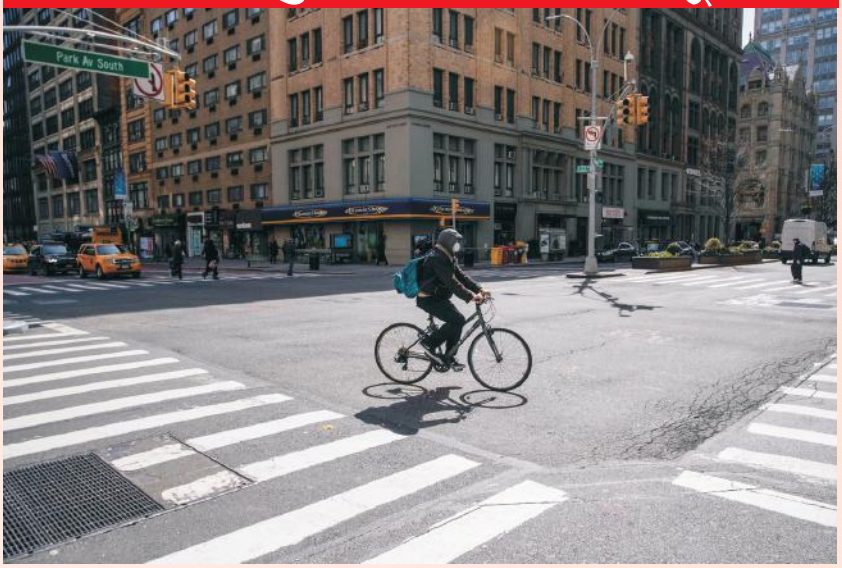

दुनिया का सबसे संक्रमित शहर रहा न्यूयॉर्क अब अमेरिका की सबसे सुरक्षित जगह है। यहां रहने वाले 2 करोड़ लोगों के स्व-अनुशासन से संक्रमण दम तोड़ रहा है। बुद्धवार को 70 हजार टेस्ट में सिर्फ 636 मरीज मिले यानी 0.87 प्रतिशत की नए मामले। यानी संक्रमण फैलने की दर 1 प्रतिशत से भी कम है। हफ्ते में कई दिन तो पूरे शहर में कोरोना से एक भी मौत नहीं हो रही है। गवर्नर एंड्रयू क्यूमो कहते हैं 'यह जीत शहर के लोगों की है, जिन्होंने अपनी लाइफस्टाइल में बड़े बदलाव किए हैं।' इस शहर ने दो महीने तक हर रोज औसतन 700 से ज्यादा मौतें देखी हैं। अस्पतालों की व्यवस्था चरमरा गई थी। कब्रिस्तान तक में जगह कम पड़ गई थी। न्यूयॉर्क के लोगों ने साइकिल और ई-स्कूटर को अपना नया हमसफर बना लिया है। महामारी के दौरान लोगों ने 7 लाख से ज्यादा साइकिल ट्रिप की हैं, जो बीते साल की तुलना में दोगुनी है। यही नहीं, शहर में साइकिल की किल्लत शुरू हो गई है। कुछ लोगों ने दोगुनी कीमत 400 डॉलर की जगह 800 डॉलर देकर साइकिल खरीदी। ब्रुकलिन बाइसिकिल कंपनी ने बताया कि हमारे शोरूम में फिलहाल साइकिल नहीं बची। इनकी बिक्री हॉट केक की तरह हुई।

फिजिकल डिस्टेंसिंग मास्क कल्चर बना: न्यूयॉर्क ने मास्क और दूरी को कल्चर बनाया। लोग बेवजह बाहर नहीं निकल रहे। संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने वाले 92 प्रतिशत लोगों को ट्रेस कर टेस्ट किए गए हैं। यहां 3 में 1शख्स का टेस्ट हो चुका है। अब जल्द स्कूल खोलने की भी योजना है।

घर के बैकयार्ड में हो रही हैं छोटी-छोटी पार्टियां : घर के बैकयार्ड में हो रही हैं छोटी-छोटी पार्टियां मिलने-जुलने या छोटी पार्टी के लिए न्यूयॉर्क के लोगों ने होटल या किसी पार्क में जाने की जगह अपने घर का बैकयार्ड ही चुना। वे ऐसी किसी जगह नहीं गए, जहां सोशल डिस्टेंसिंग के नियम का पालन मुश्किल हो।

टिकट को लाइन में न लगें, इसलिए फ्री यात्रा: न्यूयॉर्क ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट कुछ घंटों में ही मेट्रो-बसों को सैनिटाइज कर रही है। टिकट के लिए लाइन न लगे, इसलिए सभी के लिए बस यात्रा मुफ्त कर दी। हालांकि संक्रमण के डर से लोगों ने मेट्रो या सिटी बसों में सफर बहुत कम कर दिया है। **हर जगह टेस्टिंग सेंटर, 7.5 लाख रूपए जुर्माना:** शहर में आने वाले हर शख्स का टेस्ट हो रहा है। 14 दिन का क्वारेंटाइन अनिवार्य है। बस, टैक्सी, एयरपोर्ट हर जगह टेस्टिंग सुविधा है। क्वारेंटाइन के नियम तोड़ने पर 7.5 लाख रूपए का जुर्माना लगाया जा रहा है।◆◆◆

हिमाचल के युवक खेती अपनाएं और बने आत्मनिर्भर

लवनीश सिंह जुब्बल कोटखाई के रहने वाले युवक आत्मनिर्भर बन के सारे युवकों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने हुए हैं। उन्होंने बारहवीं कक्षा के बाद वकालत की पढ़ाई शिमला से शुरू की लेकिन चंडीगढ़ डी.ए.वी. कॉलेज में एक अच्छा अवसर मिलने की वजह से उन्हें वकालत की पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। चंडीगढ़ कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने एक आईटी कंपनी में काम करना शुरू किया जहां से वह कुछ समय के लिए यू.एस.ए. गए। उनके माता-पिता दोनों सी.आई.डी. में कार्यरत है और और इनके बगीचों में काम करने वाला कोई नहीं।

लवनीश को पहले से ही कृषि करने का शौक था। उन्होंने सोचा की क्यों न इसी में अपना भविष्य बनाया जाए। लवनीश ने बताया कि 4 साल पहले चंडीगढ़ में आईटी कंपनी की नौकरी छोड़ वह गांव में अपने बगीचे संभालने वापस आए इनके बगीचे में डार्क गाला किस्म के 100 और किंग रॉट किस्म के 200 पेड़ भी हैं। हिमाचल के पूर्व राज्यपाल आचार्य देवव्रत भी जैविक कृषि के लिए लवनीश की प्रशंसा कर चुके हैं। ठाकुर लवनीश सिंह का मानना है कि आजकल का युवा जैविक कृषि में भी अपना भविष्य बना सकता है।

इस सफलता का श्रेय वह अपने माता पिता को देना चाहते हैं जिनके आशीर्वाद से वह इस मुकाम तक पहुंचे हैं। उनके द्वारा बगीचे में तैयार ऑर्गेनिक डार्क वैरान गाला सेब पराला मण्डी में 200 रूपए प्रति किलो के हिसाब से खरीदा गया।◆◆◆

लाल किले पर रचा एक और इतिहास

... विनोद बंसल

भारत के 74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज श्री राम जन्मभूमि की स्वतंत्रता के मुद्दे को लालकिले की ऐतिहासिक प्राचीर से उठा एक नया इतिहास रचा है। हमने अब तक 12 प्रधान मंत्रियों को लालकिले की प्राचीर से सुना। किन्तु,मात्र एक, इन चौदहवें प्रधान मंत्री को ही वह गौरव प्राप्त हुआ कि वह अपने उद्बोधन में अयोध्या में भगवान श्री राम की जन्मभूमि की मुक्ति का उद्घोष राष्ट्रीय गौरव के साथ कर सके। प्रधान मंत्री ने श्री राम जन्मभूमि के सम्बन्ध में देशवासियों के संयम की सराहना करते हुए कहा कि दस दिन पूर्व हीअयोध्या में राम जन्मभूमि के मंदिर का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ है। सदियों पुराने विषय का शांतिपूर्ण समाधान अब हो चुका है। देश के लोगों ने जिस संयम और समझदारी के साथ आचरण किया, यह अभूतपूर्व है। यह भारत के उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है। हर्ष की बात यह भी है कि राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद भी वह प्रथम राष्ट्रपति हैं जिन्होंने स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर हुए अपने राष्ट्र के नाम संदेश में इसका गौरव के साथ उल्लेख करते हुए मामले के शांतिपूर्ण सर्व स्वीकार्य हल पर प्रसन्नता व्यक्त की।

यहां यह जान लेना भी आवश्यक है कि श्रीराम जन्मभूमि की मुक्तिहेतु 16 करोड़ लोगों की सह-भागिता से हुए विश्व के सबसे बड़े जन-आन्दोलन की कानूनी लड़ाई ने भी अनेक इतिहास रचे।अपने 70 वर्षों के लम्बे न्यायिक काल खण्ड में इसने जहां बहुतेरे उतार-चढ़ाव देखे तो वहीं इसके कारण माननीय न्यायालय तथा न्याय व्यवस्था ने भी अनेक प्रहार झेले। हमारी न्याय व्यवस्था! जिसने स्वयं पर हुए अनवरत हमलों को भी नजरंदाज करते हुए न्याय को तय समय सीमा में देकर एक अत्यंत सराहनीय व विश्व भर के लिए अनुकरणीय कार्य किया।

जब देश के प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय खंड पीठ स्वतंत्र भारत के सर्वाधिक चर्चित मामले पर अपनी पहली सुनवाई हेतु बैठी। इससे पहले 11 अगस्त को न्यायालय ने सभी पक्षकारों को अपने अपने पक्ष के दस्तावेज समय पर जमा कराने हेतु आदेश दिया था। दोपहर 2 बजे भारत के वरिष्ठ वकीलों, वादी-प्रतिवादियों तथा अपीलकर्ताओं इत्यादि से खचा-खच भरे न्याय कक्ष में जैसे ही प्रधन न्यायाधीश न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा की अध्यक्षता में गठित पीठ ने सुनवाई प्रारम्भ की तथा श्री रामलला विराजमान की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता के.पाराशरण, सी एस वैद्यनाथन तथा हरीश साल्वे ने अपना पक्ष रखना प्रारम्भ किया, दूसरे पक्ष ने व्यवधान पैदा करना प्रारम्भ कर दिया। पूर्व कानून मंत्री तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कपिल सिब्बल, दुष्यंत दवे तथा राजीव धवन ने एक के बाद एक लगातार कार्यवाही में रोड़े अटकाए।

बाबरी के मुस्लिम पक्षकारों की ओर से पैरवी करने वाले इन वकीलों ने कहा कि यह सुनवाई बीजेपी के इशारे पर हो रही है क्योंकि उसी के चुनाव घोषणा पत्र में इसका वर्णन भी है और सुब्रमण्यम स्वामी नेभी इस सम्बन्ध में प्रधान मंत्री को पत्र लिखा है।

दूसरा वे बोले कि इस मामले की सुनवाई की अभी जल्दी ही क्या है? इसे जुलाई 2019 के आम चुनाव के बाद ही प्रारम्भ करनी चाहिए। तीसरा, कपिल सिब्बल ने कहा कि इस मामले में निर्णय से बाहर गम्भीर परिणाम होंगे तथा इससे देश के साम्प्रदायिक ताने बाने को नुकसान पहुंचेगा। चौथा, मुकदमे के महत्त्व को देखते हुए उच्चतम न्यायालय के पांच या सात सदस्यीय पीठ ही सुनवाई करे न कि वर्तमान तीन सदस्यीय पीठ इसकी सुनवाई करे। पांचवा मुख्य न्यायाधीश की सेवा निवृत्ति की तिथि आने वाली है अत: यह मामला उनके रहते पूरा नहीं सुना जा सकता। छठा बहाना यह था कि न्यायालय को दिए जाने वाले 90,000 पृष्ठों के दस्तावेजों के अनुवाद हेतु भी समय चाहिए। इस सब के ऊपर पूर्व कानून मंत्री व कांग्रेसी नेता कपिल सिब्बल ने तो भरे कोर्ट को धमकी तक दे डाली कि यदि हमारी बातें नहीं मानी गईं तो हम कोर्ट का बहिष्कार करेंगे। इस प्रकार पहले ही दिन की बहस में राजनीति, धमकियां, असंसदीय भाषा-शैली, अतार्किक बहसबाजी से देश की सर्वोच्च न्यायालय को दो चार होना पड़ा।

मात्र दो ही दिन बाद सात दिसंबर को एक अन्य मामले में सर्वोच्च न्यायालय को फिर इन तथाकथित वरिष्ठ वकीलों को आड़े हाथों लेते हुए सीधी चेतावनी देनी पड़ी। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ को यहां तक कहनापड़ा कि वकीलों को कानून का मंत्री कहा जाता है। उन्हें कोर्ट का अधिकारी भी कहा जाता है किन्तु दुर्भाग्य से वकीलों का एक छोटा सा समूह अपनी आवाज बढ़ा रहा है। जोर से चिल्लाने वालों को स्पष्ट तौर से समझ लेना चाहिए कि उन्हें सहन नहीं किया जाएगा। आवाज बढाने का अर्थ है कि या तो वे अपने पक्ष को रखने में अक्षम हैं या वे उसके लिए पूरी तरह से तैयार नहीं हैं।◆◆◆

स्कूली शिक्षा में हिंदी

... सुरेन्द्र पाल वैद्य

भारत विश्व के सर्वाधिक प्राचीनत्तम राष्ट्रों में से एक है। इसकी धरती पर अनेक सभ्यतायें जन्मी, फली-फूली तथा विकास के नए आयाम छूकर पूरे विश्व का मार्गदर्शन करती रही हैं। ज्ञान, विज्ञान के विकास और नैतिक जीवन मूल्यों के सर्वश्रेष्ठ आदर्श यहां स्थापित हुए हैं। वेद, उपनिषद्, रामायण तथा महाभारत जैसे अनेक महान संस्कृत ग्रन्थों की रचना इसी भारत भूमि पर हुई। संस्कृत भाषा से ही यहां की अनेक क्षेत्रीय भाषाएं जन्मी,फली फूली तथा साहित्य रचना के अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किये। इसी की ऊर्जा ने नृत्य, संगीत, वास्तुकला, चित्रकला तथा जन साहित्यों को गरिमामय स्थान प्रदान किये।

कालान्तर में विश्व के अन्य समुदायों में भारत के प्रति आकर्षण बढ़ता गया तथा यहाँ की सभ्यता, संस्कृती व अकूत धन दौलत पर उनकी गिद्ध दृष्टि पड़नी प्रारम्भ हुई। इसी से औपनिवेशिक मनोवृति विकसित हुई जिसने भारतीय संस्कृति व सभ्यता पर अपना असर दिखाया। प्रारंभ में तो ये लोग आक्रमण कर यहां की धान दौलत को लूटते रहे तथा अपने वतन ले जाते रहे। फिर ये लुटेरे मुगल यहां के शासक बन बैठे। इन्होंने यहाँ की सभ्यता संस्कृति के भयानक विनाश करने के साथ साथ उन्नत भाषाओं को भी समाप्त करने की पूरी कोशिश की। शक्तित या राजसत्ता के बल पर उर्दू की शिक्षा को बढ़ावा दिया। इन मुस्लिमों के शासन काल में ही यूरोपियनों के साथ अंग्रेजों का आगमन हुआ। इसीके साथ प्रारम्भ हुआ भारतीय सभ्यता और संस्कृति को योजनाबद्ध ढंग से समाप्त करने का षड़यन्त्र ये विदेशी भली-भांति जानते थे कि भारत को हमेशा के लिये गुलाम बनाये रखने के लिये यहाँ की शिक्षा और उन्नत भाषाओं को नष्ट करना आवश्यक है। लॉर्ड मैकाले की नीतियाँ के अनुसार एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू की गई जो भारतीयों की राष्ट्रीय पहचान को समाप्त कर दे। लोगाँ के दिल और दिमाग को यहां की संस्कृति भाषा से काटकर अंग्रेजी भाषा, सभ्यता व पश्चिमी संस्कृति से जोड़कर एक स्वाभिमान शून्य पीढ़ियां तैयार की जा सके, जो केवल देखने में ही भारतीय लगे और वे काफी सीमा तक इसमें सफल भी हुए। आज वे अपनी प्राचीन संस्कृति तथा भाषा के स्वाभिमान की भावना से शून्य तथाकथित आधुनिक कहलाने वाले लोग ही हिन्दी का विरोधा तथा अंग्रेजी के पक्षधर बने हुए हैं।

सैकड़ों वर्षों की गुलामी के पश्चात् जब हमारा देश स्वाधीन हुआ तो इसकी सत्ता उसी कांग्रेस के हाथों में आई जिसकी स्थापना 1885 मेँ एक अंग्रेज ए. ओ.ह्यूम ने की थी। इसकी स्थापना के पश्चात् इसमें बहुत से देशभक्त भारतीय लोग आए जिनके कारण यह आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पार्टी मे परिवर्तित हो गई। इसी में रहकर बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचन्द्र बोस तथा सरदार पटेल जैसे लोगों ने भी काम किया था। आजाद भारत की बागडोर नेहरू के हाथों मे आने के कारण देश की स्वदेशी पहचान को पर्याप्त उभार न मिल सका क्योँकि नेहरु के व्यक्तित्व और मन पर अंग्रेजी सभ्यता का पूरा प्रभाव था। इसी के कारण देश का शासन उसी राह पर चला जैसा अंग्रेज छोड़ गए थे। भारतीय संस्कृति की भंयकर उपेक्षा का शिकार इसकी भाषाएं भी हुई जिससे आज छह दशक बीत जाने के बाद भी देश के प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेजी का ही बोलबाला है। देश की प्रशासनिक सेवाओं में जो अधिकारी आते हैं उनकी शिक्षा दीक्षा में अंग्रेजी का अंग्रेजी भाषा और सभ्यता का प्रभाव देखने में अधिक मिलता है। आज तो देश में एक ऐसा वातावरण बनाया जा रहा है कि देश के हर बच्चे को अंग्रेजी भाषा में निपुण होना होगा नही तो वह जिन्दगी की दौड़ में पिछड़ जायेगा। इसी के परिणाम स्वरूप स्कूली शिक्षा में भी अंग्रेजी को वरीयता दी जाने लगी है।

हिन्दी में बच्चों को गिनती भूलती जा रही है। दुकानदार किसी स्कूल के छात्र से सोलह रुपये मांगता है तो जवाब मिलता है कि अंकल वो कितने होते हैं, तब उसे सिक्सटीन बताकर समझाना पड़ता है। इसी प्रकार फलों, सब्जियों तथा अन्य वस्तुओं के लिए हिन्दी के शब्दों का प्रचलन कम होता जा रहा है। देश के होनहार ठीक ढंग से कोई भी भाषा नहीँ सीख पा रहे हैं। अत: यह आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी के महत्व को पहचाना जाए। स्कूली शिक्षा में अनिवार्य रूप से हिन्दी को लागू किया जाना चाहिए ताकि आगे चलकर यह हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा बन सके।◆◆◆

ऑनलाइन व्याख्यानमाला

अखिल भारतीय साहित्य परिषद हिमाचल प्रदेश के द्वारा 16 दिवसीय ऑनलाइन व्याख्यानमाला का समापन श्रीधर पराड़कर अखिल भारतीय संगठन मंत्री के अंतिम उद्‌बोधन के साथ हो गया। श्रीधर पराड़कर जी ने हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति, लोक कला, लोक साहित्य, लोक नृत्य के विषय में सारगर्भित जानकारी दी। इस व्याख्यानमाला में 32 वक्ता विभिन्न सत्रों में हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक झलक, लोक कलाएं, लोक देवता इत्यादि विषयों पर अपने रिसर्च पेपर पढ़े। इस व्याख्यानमाला का उद्‌घाटन मुंशी प्रेमचन्द जयंती को हुआ। इसमें लोक भाषा, लोक देवता, लोक यात्रा तीन विषयों पर संपूर्ण हिमाचल प्रदेश के साहित्यकारों ने अपना पक्ष प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक प्रो. वीर सिंह रांगड़ा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य परिषद हिमाचल प्रदेश की अध्यक्ष डॉ. रीता सिंह ने किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ताओं में डॉ. प्रत्यूष गुलेरी, डॉ. गौतम शर्मा और अदिति गुलेरी भी उपस्थित रहे। इस ऑनलाइन व्याख्यानमाला का सफलतापूर्वक संचालक दिल्ली के रंजीत कुमार ने किया।

अगस्त माह में हुए विभिन्न ऑनलाईन कार्यक्रम

प्रश्नोत्तरी

1. संयुक्त राष्ट्र संघ के वर्तमान महासचिव कौन है?
2. क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश कौन-सा है?
3. 'माइक्रोस्टेट' आकार तथा जनसंख्या के हिसाब से बहुत छोटे देश को कहते हैं। एंडोरा भी एक 'माइक्रोस्टेट' है। यह किस महाद्विप में स्थित है?
4. पीर पंजाल पर्वत श्रृखंला कहां स्थित है?
5. किस देश के साथ भारत की स्थल सीमा सबसे लम्बी है?
6. गिरि गंगा किस नदी की सहायक नदी है?
7. भारत द्वारा विकसित नाग किस तरह की मिसाइल है?
8. 2022 में विश्व कप फुटबॉल की मेजबानी कौन-सा देश करेगा?
9. 'भारत कोकिला' के नाम से किन्हें जाना जाता है?
10. प्रसिद्ध कोणार्क सूर्य मंदिर किस राज्य में स्थित है?

उतर:1. एंतोनियो गुटारेस, 2. अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, 3. यूरोप में फ्रांस तथा स्पेन के मध्य, 4. हिमालय पर्वत श्रृंखला के मध्य हिस्से में यह जम्मू-कश्मीर से लेकर हिमाचल प्रदेश तक फैली है, 5. बंगलादेश, 6. यमुना नदी, 7. टैंक रोधी मिसाइल, 8. कतर, 9. सरोजिनी नायडू 10. उड़ीसा।

पहेलियां

1. बांबी वा की जल भरी, ऊपर जारी आग।
   जब बजाई बांसुरी, निकसो कारो नाग।।
2. पीली पोखर, पीले अण्डे, बेगि बता नहीं मारूं डण्डे।
3. पैर नहीं तो नग बन जाए, सिर न हो तो 'गर'।
4. यदि कमर कट जाए मेरी, हो जाता हूं 'नर।'
5. अंत नहीं तो फौज समझिए, आदि नहीं तो बन गया नानी।
6. देश प्रेम के लिए न्यौछावर, उनकी बड़ी महान कहानी।।
7. प्रथम नहीं तो गज बन जाऊं, मध्य नहीं तो काज।
   लिखने-पढ़ने वालों से कुछ, छिपा ना मेरा राज।
8. तीन अक्षर का मेरा नाम, उलटा-सीधा एक समान।
   आता हूँ खाने के काम, बूझो तो भाई मेरा नाम?
9. अक्षर तीन का मेरा नाम, हवा में उड़ना मेरा काम।
   उल्टा सीधा एक समान, बूझो तो जानू मेरा नाम ?
10. तीन अक्षर मेरा नाम, उलटा सीधा एक समान।
    सुभाष चन्द्र का मैं हूं गांव, जल्दी बताओ मेरा नाम?

उत्तर : हुक्का, कढ़ी, नगर, सेनानी, कागज, डालडा, जहाज, कटक

चुटकुले

एक बात मुझे समझ नहीं आई
जो गरीब के हक के लिए लड़ते हैं
वह लड़ते-लड़ते अमीर कैसे हो जाते हैं!
पप्पू- आज मुझे एक मैसेज आया और
उसके बाद मेरा मोबाइल बंद हो गया।
चप्पू- अरे!! ऐसा कौन सा मैसेज आया?
पप्पू- बैटरी लो
चप्पू- मुझे फॉर्वर्ड कर दे, लोगों के मजे लेंगे!!

जिनका कोई नहीं होता
उनका मोबाइल होता है!
एक पागल आईने में
खुद को देख कर सोचने लगा..
यार इसको कहीं देखा हूं..
काफी देर टेंशन में सोचते-सोचते..
धात्त तेरी की ये तो वही है जो.
उस दिन मेरे साथ.. बाल कटवा रहा था।

दूल्हे वाले- बारात ठीक 8-00 बजे
पहुंच जाएगी पर एक बात तो
हम कहना ही भूल गए
दुल्हन वाले-जी पता है बारातियों का
स्वागत पान पराग से करना है ना!

दूल्हे वाले- नहीं, रास्ते के सारे
चालान आपको ही भरना है।
पुलिस: तुम्हें पता कैसे चला कि
इनके घर पर कोई नहीं है!
चोररू फेसबुक पर पूरे परिवार के
15 फोटो डाले थे, और लिखा था
मस्ती With Full Family in Nainital- English के
अलावा हिंदी में भी कुछ शब्द Silent होते हैं।
.
जैसे की अगर ध्यान दिया हो तो
जब कोई दुकानदार भाव करते समय कहता है कि
'आपको ज्यादा नहीं लगाएंगे' तो इसमें..
'चूना' शब्द Silent होता है

प्रकृति वंदन सहित विभिन्न कार्यक्रमों की झलक

भारत रत्न, कुशल प्रशासक, राष्ट्र-हित सर्वोपरि का भाव जीवन में रख, राजनैतिक अस्पृश्यता से परे व सभी दलों में समान रूप से सम्मानित, मितभाषी, लोकप्रिय पूर्व राष्ट्रपति

श्री प्रणव मुखर्जी जी

अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर परम तत्व में विलीन हो गए

भारत के राजनैतिक-सामाजिक जीवन में उपजी इस शून्यता को भरना आसान नहीं होगा। देश के प्रति समर्पण के चलते देशवासियों के लिए वह एक सच्चे मार्गदर्शक थे

इस महान पुरुष को भावपूर्ण श्रद्धांजलि